यজुदर्वप-मश्विण।

[শুক্লযজুর্বেবদ — বাজসনেয়িসংহিতা।]

একত্রিংশোহ্ধ্যায়ঃ।

यमानाक्षर निवर मचा ८४वथर निवम्बिकाम । अक्टिबर्टमध्यूनानग्रदय टनक्षीटना निक्कटक ॥

अवमा कालका।

नव्यनीर्व। पूक्रमः नव्यामः नव्यापः ।

প ভূমিত প্রভ: লগুরাভাভিউদশাসুলম্ ॥ > ॥

পুষ্ঠুভঃ বৈড়িশী জিই,ণ্ ব্রহ্মণ ব্রহ্মণমিত।ডিঃ পুরুষ্মেগরপক্ত পরমাত্মনাছ্বর্বাঃ भूकाषामात्व (आकारक्षमानवेष्ठनी भूक्रत्याक्त कृत्रत्व। व्यवाक्षमक्षांविकक्षण (क्ष्रात्व) वृद्ध नुक्रमः भूक्षमात्र भवर किकि किलाकिका क्यू अनिकः नक्यां नम्बद्धिता अप्राक्ष कर्ण निवाबारवार्थार छ। कोषुनः। नश्यमीर्व। नश्यनरकः वह सागाही। नःवादाहरू वह याक्र हैकि विद्राप्त जार मिळानक्यक्रयम ह कावार। कका नक्यभनर नीमि नीर्वाकि निवारनि विक नः मीर्यः कंमिनि (११० ६।)।६०) हेकि विकः विकास मिनितार्रं पिता श्री है। चरेश्वरविक नक्यमीर्वहर। धार्मर्थकिन। मञ्चामः স्वयमको। १ एक नः। विक्रिशेष्ट्र विकारिया विद्यान्य के कर । व्यवसार विवास प्राप्ता रक 'वरमा कर्म था (পা॰ e व के हु।) ভিতি পাদপ্রাব্যাপঃ। পাদপ্রবিশং কর্মিন্তাপ্রকাশবং। স: পুরুষো ভূমিং ব্রীক্রাভ-লোকস্মপাং লক্ষ্ ভঃ ভিষাক উদ্ধান্ত স্পুরা ব্যাপা। স্পু:পাভিক্যাপ্তিকর্মা। ব্যা ভূমিদক্ষে। ভূরোপলক্ষকঃ। পঞ্চ ভূরানি রাাপ্য দশাকুলপরিমিতং দেশমণ্যাভর্তৎ অভি-यवा मारकाः नकानाक्नाकृतमित्वामा सप्ति व्हिनः। मानिन केनि कूरा नकारक किन्न जार्षा कु। नत्कवा (मार्थर निकानमद्रः ज्यार्थ्य क्षण्यार्थ्याष्ट्रं द्रिक् क्षर्टः निकामाष्ट्रमा ল্পায়। ল্মানং বুক্ষং পরিষ্থকাতি। ভ্রোরভঃ পিপ্লানং স্বাৰ্ভ্যমন্ত্রলা ক্রিট্রক্টি (মুক্ত ০ ০১০) ইভি। ল পুরুবোহত দেবতা। তথাচ শ্রুতিঃ ইমে বৈ লোকাঃ পুরুর্মেব পুরুষো যোহরং পবতে লোহভাং পুরি শেতে ভত্মাৎপুরুষঃ (১০৬২১) ইতি । ১ ।

विधीया किथा।

ख्याम् उपरक्षणाटना यगरत्नमा किरवास्कि । २ व

यर देवर वर्षमागर जगर छरमस्वर भूक्तव अव। यर कुठमछोछर जगर वक्क छावार करिकार क्रमार क्रमार युक्तम अन यशाच्यम कर्षा वर्षमामाह ख्यानियकाह महस्त्रहाल विवाहिन भूक्षणानवनाः करेननाकोकामानिस्मात्रांन क्षार्थाक्ष्रहना'यकिः कानः। केवानि ह अमृक्ष्य रक्षक केनानः चामी म शुक्रमः घर मणार वन्त्रम श्रामिशार (कारमामारक्रम करणम मिनिश्च-कृष्डमा (करेता वांक को बार का तथा क्षा विकास) भारत क्षा वांक का वांक का विकास का का वांक का विकास का वांक का व - भूक्षक क्षेत्र । व्यक्तिमारं, कर्षकर्गरंभाभाष्ठ भभक्षकाचीकामारक्रक कक वक्षकिकार्वा मुझाः लक्षरः प्रकारक्षणिः लिविनामीकाम्यमात्। च्यूक्रम्यामवन्यवस्थानाः प्रकारोपः।



त्म कि (मारक्ष्यत्म मार्ग) श्रिषक देखार्थः। क्रिक यर जीवकाक्ष्यश्चेतांकि देवकाक क्रिक तक्ष्म (हमानः समानिक्षपर्यास्था कृष्णाम देखः क्ष्मारप्रतेनव विर्वतः 'देखः समानाद्धि (वर्ग केंगजीविक' देखि स्थारकः ॥ (०) ज—२क) ॥

ভূতীয়া কণ্ডিক।। এতাবাসত সহিমাতো আয়োলচ সূক্ষয়। পাছেছে বিথা ভূতাবি অিপাণ্ডামৃতং দিবি। ০।

অভীতানাগভরত্তিরানকালনম্বরং জনতাবত্তি এতাবাজ্যক্ষিছিল অন্ত পুরুষণ্ড মহিলা অভীরলামর্থাবিশেষো নিতৃতিঃ নতৃ নাতাবং অরুপং। বাজ্যপুরুষণ্ড অভঃ জন্মাং মহিলা জনজালার জ্যায়াংশ্চ অভিশয়েনাবিকঃ। এতত্তত্ত্বং লাষ্টীক্রিয়তে। অত পুরুষণ্ড বিশ্বা লাম্বাণি ভূতানি কালত্রেরবর্তীনি প্রাণিজ্যতানি পাশ্শতভূর্বাংশঃ। অত পুরুষণ্ডারনিষ্টই ত্রিশাব্দর্মণং অমৃতং বিনাশর্ভিত্ব তব দিবি ভ্যোতনাম্বকে অধান্ধানে অরুপেইনভিত্তি ইতি লেবঃ। বজুপি 'গতাং জ্ঞানমন্ত্রং প্রন্মে' ত্যায়াতত পর্বান্ধণ ইয়ভারা অভাবাৎ পালচত্ত্রিরং নিরুপরিত্রশক্ষাং ভ্যাপি জ্যাবিদং প্রস্করণাপ্রভারা বিবন্ধিভ্যাৎশ

চতুৰী কৰিক।। | | | | ক্ৰিণাৰ্থ্য উদৈৎপুক্ষঃ পাংলাহকেগভনংপুনঃ।

कत्वा निश्व नाक्षांगरमाममाममाम विश्व । ।

বোষরং ত্রিপাৎপুরুষঃ লংলারস্পর্যাহতত্রজারণঃ অয়মূর্ছঃ উলৈৎ অস্থানজানকার্যাব লংলারাছভিন্ত হোডতাই হাত শলোবৈরস্পৃত্তঃ উৎকর্ষেণ ছিত্যাম্। জভালা পালো লেখো জগজ্ঞার ইর মারামাং পুনঃ অভগৎ কৃত্তিগংলারাভাগং পুনঃ পুনগাল্জভি। লক্ষা জগজ্ঞ পর্যাত্মগাল্লভিং 'বিষ্টভাহিনিবং কুৎক্ষমেভাংশেন ছিতো জগৎ' (ভগত ১০ ৪২) ইতি। ভভো নারামানাগভানিত্তরং নিষ্ঠ বিষ্ পর্বত্তি কিছে দেবভিন্তাগালির্মেশ বিশিং লন বাজ্ঞান ব্যান্তবান্। কিংকুরা লাল্লানন্মে অভি অভিলক্ষ্য অন্নেন শ্র

वृक्षभागर माममः जनमानिवायकारतारभक्षः ८५७मळानिकाकः जमममः क्षण्यिक्षणरहस्य। भारतम्भाषकः (क जास्मकः प्रमुद्धमा वायर्था कृषा वाश्वियामिकार्यः ॥ (७) ज — ३क)॥

शक्त्रो किका।

७८७: विदाष्ठकाद्रण विदारको व्यक्ति शुक्रमः।

म चारका चकाविष्ठार भन्तास्त्रम्यर्था भूतः । ८ ॥

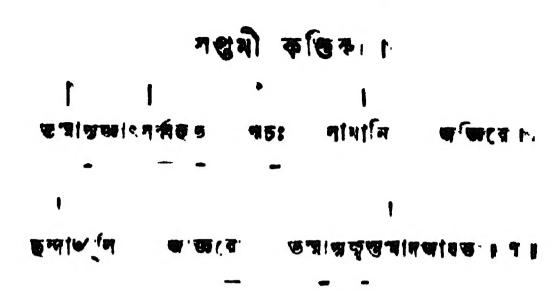
বিশ্বর্ধ বাক্রামনিতি বর্ত্তং তদেব প্রপশতে। ততঃ তথালানিপুরুষাৎ বিরাট্ ব্রহ্মাওনেলোচনায়ত জাতঃ। বিবিদং রাজতে শভুক্তরেতি নিরাট্। বিবাজঃ অধি ব্রিচেনেলাডনায়ত জাতঃ। বিবিদং রাজতে শভুক্তরেতি নিরাট্। বিবাজঃ অধি ব্রিচেনেলাডার তবেব দেবমনিকরণং ক্রমা পুরুষঃ তন্ধেলাভারামী এক এব পুনাম-লায়ত। সর্বাবেদাভাবেজঃ পরমাত্মা অমায়য়া বিরাজ দেবং ব্রহ্মাভরূপং স্ট্রা তার জীব-র্বেণ, প্রাবিশ্ব ব্রহ্মাভিনামী দেবভাত্মা জীবোচভার্বিঃ। এতচ্চাম্বনোভারভাগমীয়ে শারুষ্ট্রকং 'ল যা এব ভূভানীজিয়ালি বিরাজং দেবতাঃ কোলাংশ্চ স্ট্রাত্র প্রবিষ্ট ইয় বিহরতি (নুসিংহতা ২০৯) ইতি। কিঞ্চ ল জাতো নিরাট্ পুরুবোহতারিচাত্ত অভিরিজ্যো দেবভির্যাত্মস্ত্রালিরপোহত্বৎ পলচাদ্দেবালিজ বভাবাদ্দ্ধি ভূমিং ননক্ষেতি শেষঃ। অধ্যে ভূমিস্টেরনজরং তেবাং জীবানাং পুরঃ ননর্জা। পূর্বাত্ত নপ্রভিন্ধাত্মভিরিতি পুরঃ শরীরালিয় (৩১জ—৫ক)।

मछी कि छक।

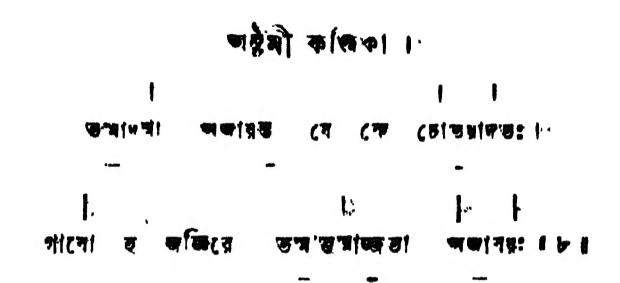
क्षात्रकारनक्षः नःकृतः श्रमाकान्।

भण्रकारण्डातक वांत्रगामात्रगा शामगण्ड (व ॥ ७ ॥

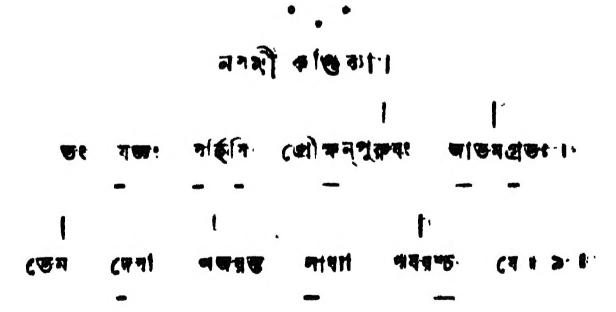




मक्छ छ: ज्याच जार बाहः नामामि ह क जिल्लात छिर भन्नामि। इन्सार्गि भाववाली कि किर्त क्याञ्च त्राकात्रकः। क्याङ्गामिक्ट त्याकिक विना वका म निवाधि । १-३.



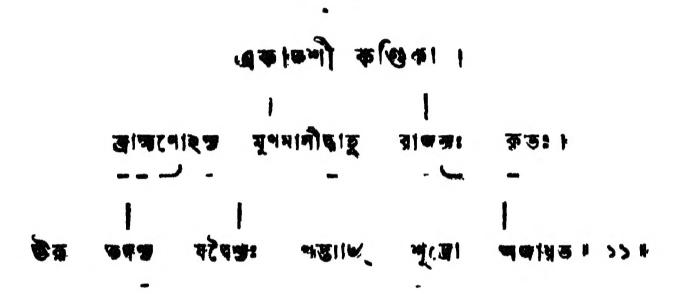
क्षणांत्रकार जयाः जजात्रक छेरणद्वाः क्या (व एक ठायांकित्रका मर्ककात्रावाव्य वतान्त्र कित्रावकः केलरत्राक्षां रात्राक्षका रात्राः रङ केलत्रवकः। क्वान्यनः वीर्वकः। केविरावाकानः (क्रार्क खबुख्यः म¹स (छन् भाषाध्रकः। छन। ए च्यु हेर अत्राद बख्यार भागः ह व्यक्तित्तः। किक्छ **अपायकार जलानमः जलाः जनमन् जालाः। म वि निक्षिणिया मकः निरम्सः। ५०।**



वक्कनांगरम मक्कनकः। मक्कर मक्कनांगमञ्जू तः छः भूक्रमः भक्कवांगा यः ता नवस्-वर्हिनि मामरन यरक तथीक्रवाक्रिक नक्षः तथीक्षणाप्तिः नश्यः दिः नःष्ठ अन्यः। कोष्ट्रन्तः । व्यक्त मृत्रे: भूक्त वाङ भूत्रवादावादगत्ता । केडि शामिताका कार्यादाका म विद्यारका कवि शृक्ष हेि। (छन शृक्षदक्षर्भन भक्षमा क्या कामकाश्रद मिल्मिक्षित्रकः। (१ (१-८वना वेठाछ। एत नानाः स्विनायमस्याभाः खव्यानिक्रियक्ष्वप्रश्रमः (द क खन्यूक्ना सम्प्रः गञ्जमहोतः ८७ नर्स्व भागतककः । (०४.० ३००) ।

मण्यो कालका। य्वजूक्तकः कामभूः किया मामञ्जूषा मुण किमजानी कि नाडू निमृक्त भाषा छ हाटल ॥ > ० ॥

व्यावक्रणा (एवा वर वना भूकवर अवयुः कारमरमावनावत्रम छन। कडिवा कडिवा कडिवा के व्यञ्जापन विविधर कश्चिक नखः। অত পুরুষত সুধাং কিমানীৎ কিং নাছু উদ্ধ চাভাগ। কিঞ भारको উচ্চোতে পাৰাৰণি কিৰাভাষিভাৰ্ব: । (७১ জ - ১০জ) h



भृत्काळकाषाकतानाक। जामनः क्ष्मचनकिनिनिहेः भूक्रत्वार्थ क्षमानाजर्भ नमामीक । मुपाइर पत्र देखावः। त्राक्षकः कवित्रवक्षांकिविभिष्टि। वाह् कुकः वाह्यपन विभाविकः। ত্তৰ ভবানীৰত প্ৰভাগতেঃ বং যাকুর ভক্তপো বৈদাং লম্পন্ন:। উক্লন্তাযুৎণাদিভ ইভার্ব:। **चवाच नदारि मृज्यवाधिमान् नूक्रश्यावकात्रक केंद्रनद्वा । (७३ ज—३३ क**) ॥

> बामणी कलिका। क स्था अन्ता काक्ष्मित्र प्रश्ति कामाध्रक F व्यानम्ब भूनानश्वित्रकाञ्च । ३२ । শ্ৰোজাৰায়ুল্ড

व्या क्याविक्रकार्थि भगविष्ठः भणवेश स्थाविष्ट्रम्याः खाव्यमावर्षा बक्रुवाण्ड खन्ताहरणञ्चाश 'अवद हक्षाक्रवा (क्यो काल क्यारक्रयाद ग्राह हे शहर स्वाम क्रिकार व्याप्त । हिल्लाः हक्ष्म् व कामार प्रकार वाष्ट्रा वाष्ट्र । वाष्ट्रा वाष्ट्र (आवार कर्मामका प्रकार बुवाव्यविद्यावयः। १७००-०२क)।

खाःमानने किका।

बाजा जानीवस्तिक्ष मीत्सः (क्रोह नगन्दकः

भ्राः ज्याक्षितः त्याकाल्या (गाकः २३ चनक्रात्व ॥ ३० ॥

क्टूर्म में क. खका।

कर भूक्र रवण क्विया (मना मक्क म क्यू म

वनत्स्वारकानीवाबार जीव स्याः नत्रक्तिः । ১৪॥

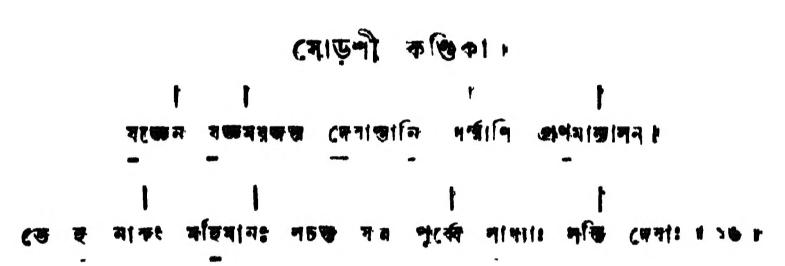
শ্ব হলা পূর্বেজেক্রমেশ দেবলরীরের সংস্কা উদ্ভরস্টাশ্রেশিং বাজ্যুবাজাপুর্ন পর্যারের পূর্বেজক্রমেশ ধনদা হবিট্নে সংস্কা প্রকাশেশ পূর্বেশিয়া হবিষা সামাধ্য বজ্ঞানত ভালানীয়ত বজ্ঞা বসতঃ ওত্রেশাজানালাহ। আক্রান্তের সংগ্রেজক্র ভালানীয়ত বজ্ঞানীয়ত বজ্ঞা বসতঃ ওত্রেশাজানালাহ। আক্রান্তের সংগ্রেজক্র ভালান আর্থিয়ের সংগ্রেজকর্ম নামাজন ভালান দর্শ্বের পূর্বেজিলানিভিনিট্রের সংগ্রেজন সংস্কৃত্র হবিন্তানালালালাহি বজ্ঞানালালাহি বজ্ঞানালাহি বজ্ঞানালাহি বজ্ঞানালাহি বজ্ঞানালাহি বজ্ঞানাহি বজ্ঞানাহিছ (১৫) ক্রমাহণাক্ষতঃ । (০০জন্মাহিছ (১৫) ক্রমাহণাক্ষতঃ ।

शकानी क विका।

मश्रानामन्यदिवस्थित्व निम्मः कृष्टाः ।

(क्या मणकार कमामा ज्यमनश्रुक्तर गक्षम् । ३६ ।

বং বলা দেবাঃ প্রজাপভিপ্রাণেজিরব্রপাঃ যক্ষণ ওলানাঃ মানসং যক্ষণ কুর্নাণাঃ পুরুষণ পশুষ্বসমূদ বিরাইপুরুষ্যের পশুষ্বেন ভাগিত হৈ । এগ্রেমাভিরেল্ড পুরিং (১৪) পুরুষের ভাগিত্বলু ভাগিত প্রাণ্ড । এগ্রেমাভিরেল্ড পুরিং (১৪) পুরুষের ভাগিত্বলু ভাগিত লালার নির্দ্ধান্ত পরিষ্ণা আলা ক্রিমাভির নির্দ্ধান্ত লালার নির্দ্ধান্ত লালার নির্দ্ধান্ত লালার পরিষ্ণা ভাগিত ভাগিত ভাগিত ভাগিত লালার ল



পৃথিপ্রপঞ্চনান্তনর্থ সংক্ষিণাত। দেশা প্রজাপতিপ্রাপরণা যজেন গণোজেন লামনেন লছরেন কলেন যজান বজান বজান প্রজাপনি প্রজাপনি প্রজাপনি কারাণান গারকানি প্রজাপি মুখ্যানি ভ্রামি আগনান ভামি প্রজাপনি মুখ্যানি ভ্রামি আগনান গারকানি প্রজাপনি মুখ্যানি ভ্রামি আগনান বিরাজনান কলাপার্থান কলাপার

ইতি পুরুষস্ক্রাক্তবাকঃ।

শক্তবালী ক জিকা।

আন্তঃ সংস্কৃতি পুনিইন্য রুলচ্চে নিখকর্মণঃ সমন্ত্রভাক্তো।

আন্তঃ সংস্কৃতি পুনিইন্য রুলচ্চে নিখকর্মণঃ সমন্ত্রভাক্তো।

আন্ত দুল্ল নিম্মন্ত্রভাক্ত কেন্ত্রনাক্রামন্ত্রে। ১৭ ৪

"बाह्याः मरक्त वेदाखवंगावाष्ट्रपमाधिकाम्नद्वारम्यि ()।।।।।२।२०) वर्षे कविका चिष्यमात्राक्षणर । क्रिमाट्या (व अक्षकेटको (नवाञ्चिष्टः आविकारवनकााः। शृक्षकेट# भूक्ष(भगताका वाक्षिष्ठ।क्रमः श्राद्धः ख्राट्ड। वद्धाः वनार भृतिवाः नकावाक मृतिवानार अस्पर पृत्रभक्षा का प्रकार । ज्ञाकिष्य (या तमः मः ज्ञः पृद्धः। ज्ञा विषर कर्षा या বিশক্ষণ: কাল্ড রলাৎপ্রীভে: বো রলোগ্রো প্রদান লমবর্ত্ত সম্ভবং। ভূতপঞ্কত কাল্ড ह नर्नर व्यक्ति कात्रमधारशुक्रम्ययमभाषिता निक्रमतीत्त गक्ष कृष्ठानि क्रामण्डा ভভত্তেভাঃ কণ্ডিজ্রশবিশেষকলর প উত্যক্তরপ উৎপত্ন ইভার্বঃ। ভত্ত রুল্ড রূপং বিশ্বন্ শারমান মটা আদিতাঃ এতি প্রতাহমুদয়ং করোতি। অত্যে প্রথমং মন্ত্রাত মত্ত্রত সভয়ত भूक्तवारमध्या विकास वाका । दिवन वर मुकार (प्रवाह प्रशांक्र (प्रवाह विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास व আজানদেবাশ্চ। কর্মপোৎক্রটেন দেবছং প্রাপ্তাঃ কর্মদেবাঃ। স্ট্রালাবুৎপদ্ধা আজানদেবাঃ। (क क्षि(ब्रा): (ज्रेड़ी: '(य मंडर क्षि(परानामाननाः म ज्रेक ज्ञाकान(परानामाननाः" (युर्॰ मा - ८ २।७६) वेषि व्यार्कः स्वापित्र चाकामरप्रवाः ॥ (७३ च – ३१क) ।

अहोभभो किक्ना। **भू द्वार** यहास्त्रभाषकार्यः ७मणः करमव विकित्ता वस्त्रात्म व्या विकार कर्मनाम । अस्य

এতং মতান্তঃ সংকাৎকৃত্তং পুরুষং সুর্গাগগুলত্বগতং বেদ জানামি ইভি ঋষেক্ষ্যনং! व्यामिकार्यमा वर्षा यक्त करा छित्रमाख्याकावार व्यापनर। ख्या ख्या পরতাদ্বভরং। ত্যোরাল্ডামতার্বঃ। ত্যংশক্নোগ্রোচাতে। ত্রোগ্রলং বিশিষা জাখা। মৃত্যুসভ্যেতি আভক্রামতি পরংব্রহ্ম গছতি। অর্নারাশ্ররারক্তঃ প**হা মার্গ**ে স বিভাতে। প্রামন্তলাভঃপুরুষমাত্মরাপং জাতিখন মৃত্তিঃ ॥ (৩১০) — ১৮ক । ॥

> धारकानिश्नी क छन।। गार्छ अञ्जतकार्यात्ना नक्षा विकास्टि। প্রকাপতি শ্রহণত (वानिर পরিপশ্র । । ताणा भन्द उत्पूर्वनानि (वर्षा । >> ।

यः मर्काषा श्रेषानंतिः व्यवसंति विका मन नार्क हत्रकि नर्कमांया श्रीमाकि । वण्डाकाक्र-भार्मिक्षिर राज्यात्मा मिकाः मन रहेना कारी कात्र राज्यात्र राज्यात्र यात्रवा व्यापका वास्त्र পৃত্তে। দীরাঃ ব্রহ্মবিদ্যাত প্রজাপতেঃ বোনিং স্থানং সকলং পরিপঞ্জ করে ব্রহ্মাদীর বিশ্বা বিশ্বানি কৰ্মাণি ভূবনামি ভূতজাভানি ভশ্বিন হ ভশ্বিয়েই কারণাশ্বনি এক্ৰি क्षाः विकाणा नर्मर क्षांच्यायार्थः । (०) च - ७३ च)।

> किथी क (शका। देशरमणा चाष्ठमण्डि देश देशनाशे पुरवाशिष्ठा (1) (वा (भरवरका। कारका ग(भा कंडाव

यः क्षमानिकतामिकाद्वरमा (मरण्डार्वाद्वाद्यमिक (क्षांकरका चन्छ (मनामार भूरदाहिकः मर्ककार्याष्ट्रा नोजः। त्रक (कर्यकाः मकामार्युक्तः ब्राकः क्ष्रमम्प्रवद्धाः करेष व्याविकाषि अभः। कोषुनामः (ताहरखश्रमो क्रहण्डीम मोनामानाम 'हेश्वनथ -- '(ना॰ अ)। ১৩৫) हेखि क्टांडामः । क्या जामात्म जमात्यार्थकार जामिशः । डेकि हिलायः । जमायमस्युडाम सा ॥ २० ॥

> अकविश्मी किश्वना। कुक्त खोकाः क्रम्मरका (वना क्राट्य क्रम्यन्त्र) बट्डेंब नर ভাষণো বিপ্তান্তস্ত व्यवस्थ । २५ । (म व।

(वयाः कोनामानाः श्रानाः कृष्ठः (बाखनः खान्नः खन्नर्गाक्षणाः) । উৎপাৰয়ত্তঃ লংগ্ৰ প্ৰথমণ তং বচোওজ্ৰণন উচু 'ব্ৰাক্ষো আড়ো' (পাও ৬ ৪।১৭১) ইতি मिलास्टः। उर्दक्राष्ठ चार्चः (मः खामानः (स चाकित्रः, सा सार्मन्यूस्किविया स्वरणप्रः বিভাজানীয়াৰ ভগ্ন ব্ৰাহ্মণত বেশা শৰে লগণ শুলা ভবজি। আদিভোগাণিতা वनरतृत्वता वन की कार्यः । (०) व -- २ं.क)।

षावित्त किका।

है अविदानाम् म है बान नर्मा लाकर म है बान ॥ २२॥

हेि बाबान्यिमीत्राद्वाद वाजनत्नित्रनश्रह्णात्राश अक्तिश्रमाद्यात्रः ॥ ७> ॥

व्याभग्राही शतक एक (यह की त्या विकास की त्या विकास की वि

यक्दिर्वन-मश्हिण।

× 141 × -----

[শুক্লযজুর্বেবদ—বাজসনেয়িসংছিতা।]

बाजिर टब्नां शासः।

लबना किना।

खरण नांशिक्षण विष्णुक्षण वृक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण विष्णुक्षण व

তাৰৰ ভাক্তং ভাৰুম তা আপঃ ল প্ৰাণ্ডিঃ ॥ ১ ॥

शृक्षयम् । जय गर्यर्थयम् । जय गर्यर्थयम् । जिल्ला गर्यर्थयम् । ज्ञान गर्यायम् । ज्ञान ज्ञान । ज्ञान ज

बिछीया किखना।

नर्य निवया किल्प विद्याचा श्रीक्षापि।

देनमब्द्धर म जियाकर म मह्या পश्चित्रकद । २ ॥

ज्जीया किल्मा।

म ७७ अछिन। जिल् यना माम महत्त्वनः।

क्तिनाशक- हेट्काच मा मा विष्मीविष्काची मचात्र चकि हेट्काचः । ज्या

किनम् नाम् । जनः नम्बा । जनः नम्बा । अन्य नम्बा । अन्य ।

हरूनीं किल्का।।

अर्था स् (वरः श्रिक्तिविष्ट्र- गर्भाः शूर्या स् बाहः पः छ गर्छः प्रकाराः

म अन काकः म- कनिक्रमानः श्रेकाकः कमाविकेकि मस्टि। मूनः । ।

प्रशासिक विश्व । ए श्रीमहर । अर्था ए (मन मर्साः विभिन्नः जम्बिक माना चित्रः । १८६ जन्नः मध्य प्रमाः । १८६ जन्नः मध्य जम्म । १८६ जन्नः मध्य जम्म । अर्था जम्म अर्था जम्म । अर्था जम्म अर्था जम्म अर्था जम्म । अर्था जम्म अर्या जम्म अर्था जम्म अर्था

भक्षेत्र किका

र प्राच्छा छ १ म श्री कि १ ह देवच य व्यावकृत क्ष्मामि विश्वा ।

প্রজাপত্তিঃ প্রজাগ লাখন বি জ্যাভীত বি লচভে ল যোড়নী । e ।

यथार পूता किक्नम किमिन म बाउद्यर। यण विश्व विश्वामि नर्मानि कृष्णामि कृष्णामि कृष्णामि कृष्णामि कृष्णामि क्षणामि क्षण

वकी किछा ।

বেন ভৌদ্ধপ্রা পুণিনী চ দুড়া বেন দঃ গুভিতং বেন নাকঃ।

(या ज्यक्तिराक त्रज्ञां विमानः करेक त्यवाम छनिया निर्मा । ।।

स्वमः श्रुक्रस्वव (क्रोक्रशा উष्मृवी। वृष्टियो क्रुस्छिछ (ध्यः। श्रुवि ह सम वृद्धः क्रुस्छ। वर्ष्यक्रीविधाववः व्यक्तिव्यावनः एक व्रुस्कि। । एक वर्ष्यक्रियावः क्रुक्तिः। एक वर्ष्यक्रियावः। क्रुक्तिः। एक वर्ष्यक्रियावः। क्रुक्तिः। एक वर्ष्यक्रियावः। क्रुक्तिः। क्रु

मथ्यो किछका।

यर कमानी जनना खल्लात -जटेशास्त्रकार मनना (स्वनारम।

यवाषि एम छिषि छ। विकासि करेन त्यमान हिंग्या विद्यमा

खाटला व्यव्वीसान्त्रानः ६ १ ६

क्ष्मिनी कारापृतिरशो वर प्रकार भगना कर्षणात्मा नांषु कुछिन। प्रकार । कीर्बुर्को कुम्मिने। व्यवना एक्निक प्रत्यारम ३४० मरकम कक्षणात्म शानिकाकर कक्षप्रस्था। कुक्रारम करक्ष्मिनिकर। दब्रकारम प्राथमारम। यंत्रक युक्तक व्यव कारापृतिहरणा

केषिकः मन् व्यापिकाणि व्यापिकः (वाजरण विद्यापक्षणि स्। एर विद्याप करेकः हिन्द्रिया। जारिया व यव्यक्षीः (२.११२६) विक्रियायः (०११३६). (६ असीर्वारक व्यामावाद्यादम (७३०१ - १क). व

वक्षी किका

८वनखर शक्क ब्रिहि कर श्राह्म न प्रत्य विश्वर खग (छ। क नी एक।

खिनिनिष्ं नः ह वि टेडिंड नर्यक् न ७ छः क्यां छ ।

' (यगखर भर्षर । (यनः भिक्षा निविक्त त्वां खत्र वक्षः छर खन्न भक्षर भक्षित्र। व्यानाकीकार्यः। कीवृत्यर छर। छन्। छन्। छन्। त्र इन्हारन निर्विष्ठ स्थानिकार्यः मे मर निष्ठार। यत समानि विषः कार्याचा एसक नोष्ट्र क विष्ठ। तक स्वय नोष्ट्रभा अध्य खर। व्यविश्वक्रभितिष्यर कात्रन्यम क्रम्बोडार्कः। खन्तिन् ब्रम्मिन् वृक्षर वर्मार कृत्रकाखर मरमिं ह मक्क् एक मश्क्षां कारण (माकि ह निर्मक्कि मर्गकारण। म भन्नभाषा क्षां का खाः श्वाखण दिक्व बत् भे हेर भंगीत्रणात्म खाः क्याकृष्ठ स्व भने दिव भने दिव भने दिव (त्थाकण्डा कोषुनः। निष्ठः कार्याकात्रन्त्रत्थन विविधः क्षण्डीकि विष्ठः। नर्सः क 四(五年) 日 (〇分世一 一年) 日

नवभी कि एक।।

का करबार्टमम् छ । व विवान अक्रात्वा याम विकृष्ट करा वर ।

खोिल भवामि मिहिना अन्दाक बद्धानि त्यक म लिखः लिखान्दा के

शीर दब्बबाहर वात्रमुखि विठात्रमुछीखि शक्षामः दब्बाखावका विकान विकास के कि शर माच्छर छद अन्य अर्गाहर शक्तार। खरा खरायार मर विद्यासर माम श्रुक्त । विक्रुं विक्रुं नर्ग विक्रुं के निक्रं क चन्नानि खरा खराबार मिहिका निविकानि। नकानि नर्नीक्ष छ अनवाद त्यकाः काना मह बाका खर्मा विकास मार्था का वा किक यह छ। वि नवि द्वा कामां व निक् खन्धार्गार्शि निका नवमात्रा अगर क्विक । नवर अंत्रिया क्यकी कार्यः। (०२०-२४)

वयथी किंकि।

म त्या वक्ष्यमिका म विश्वाका श्रामाम द्वय क्ष्यमिक विकात

गता (वना ज्यस्वमानवाक्कोटन वामक्टेश) त्रवृक्ष ॥ > ॥-

ল পরমান্ত। নোহন্ত্রাকং বন্ধঃ বন্ধুননাতঃ। জনিতা জননিত। কৈনিতা মন্ত্রেশ্রি (পা০ ৬ মা৫০) ইতি বিটো লোগঃ। ল চ বিধাতা ধার্যনিতা। লং বিদা লক্ষাণি ভ্রমানিং ভ্রমাতানি ধাননি ভানানি চ বেক। কেনা অপ্নালবঃ ভ্রীয়ে ধানন ধাননি ভানে অর্গরণে অবৈরপ্ত কেন্দ্রেরা বর্ততে। কীলুনা জেনাঃ। অনুতং ফোক্সপ্রাণকং জ্ঞানং বক্ত ক্রমণি জানখানাঃ বাপ্পুনানাঃ অপ্পুনতে জ্ঞানখানাঃ বিভ্লং ভ্রমণি। বিদ্ধানিত জ্ঞানতা পুনার্যঃ। ব্রহ্মনিত জ্ঞানং বিশ্বের বিশ্বেন বিশ্বে খানতি জ্ঞানতা পুনার্যঃ। ব্রহ্মনিত জ্ঞানং ব্যান্তর্যান্তর বর্তিবেশা নোক্ত ইতি ভারঃ । ওহল—১০০) ম

क्षकामणी किका।

পরীক্তা ক্ষ্ডামি পরীতা লোকাম পরীতা দক্ষাঃ ঞদিখো দিশত।

खेनकाम क्षेत्रकाम् जानामानमचि मश्विरयम ॥ >> ॥

इशामीर नर्कक्रक्यम् नर्काण कृष्ठान मन्नी छ छान वर्षः नर्का स्वया मुक्किक्र हार्छ। क्षिक नर्का वर्षे व

। कि की क शिका

পরি ভাগাপৃথিবী সভ হয়। পরি লোফান্ পরি দিনঃ পরি ছঃ।

वाक्क ख्यार विकास विक्षा खन्न व्यापक्क विकास वित



खरत्रामन किल्मा।

उक्नी किला।

मार ८मधार ८मनभगः शिक्रत्र एका भागरक।

ख्या माम्ख टम्पन्नादम टम्पाविमर क्रूक्र चार्च ॥ ১०॥

जन्न हुन्। (ह जात, जन्न (ययन जन मार (यथनिमर यूजियूकर कृत । यान कृष्णमा । 'जनामात्ववाक्यका विमित्र' (भा० १।२।२२२) हेजि विमित्रकाम । (मवाकाको जि (यथाको जरा। एवनभाः (प्रवनमूकाः निकत्रक वार (यवामूभाग्रक शूजनिक । (प्रवनमूकाः निकत्रक वार (यवामूभाग्रक शूजनिक । (प्रवनमूकाः विकत्रक वार (यवामूभाग्रक शूजनिक ।

शक्षणी किश्व।।

त्यवार त्य वक्रत्वा ववाक् स्थायविः ख्रावाचिः।

. दिवामिक्यम्क वास्मिक दमनार वाका ननाकू दम वादा ॥ ३८ ॥

जित्वाख्नरविष्णात्रष्टे । वक्नर्या त्व मस्र स्वार ववास् । व्यक्तिः ख्वानिक्षि व रियगार विवाध विद्याः वाह्यक त्य त्यगार क्यांकू। याका त्य त्यगार क्यांकू वाह्य 西至844 (65 d - 26 d) 1

रमाङ्गै क शिका 1

हिन र वाम ह माबर रहार खिन्नभन्न छान्। वित्र १ववा वर्ष्यु अत्रव्यक्षमार छट्टि एक पाछ। । ३७ ।

्, यश्चाक्राक्षविष्ठाष्ट्रेन्। धीकारमाश्ममा धिमः यात्रकः वाचावावाकिः क्रवार व्यक्तिकाणिः देशियत्य केटल खन्मकात्व त्य यम श्रियमा छ।। त्यशः विश्व छल्याः श्रियर प्रवर्ष ज्ञानम्ब। करेक क्रानिसारेन एक क्रकार खिल्म चाहा ज्ञब्छम्ब। को नमूक्तनारवी। खीरभरव विना यख्यानियास खार्यात्या । (०२ व - >७ म)।

देखि भाषा निय नी प्राप्तार वाष्ट्रणटन त्रिष्टिखात्रार पाबिरटनार प्राप्तः ॥ ७२ ॥

खीभग्रही भक्क एक **रवष्मीर** भरमा इरत । मार्गरथिकवरवाकिवाबिश्रमाध्याव केत्रिका ॥ ७२ ॥

यकुदर्वान-मश्रिज।

[শুক্লযজুর্বেবদ — বাজসনেয়িদংছিতা।]

ত্রয়ন্ত্রিংশোহ্ধ্যায়ঃ।

क्षमा क्षिमा।

विश्वास्त्राह्म विश्वास्त्रिका व्यक्तिक भारता व्यक्षत्रः शामकारः।

चिक्री हमः चांखारणा ज्वणार्या चगर्याणा चाम्रत्या च रणामाः ॥ > ॥

म्बार्य विद्या विद्या

ষিত্তীয়া কণ্ডিকা। । । । । ভরগো প্নকেতবো বাভজ্জা উপ ভবিণ বভত্তে ব্ৰগর্ম: । ২ দ

भावती विश्वत्व नष्ट्री देखवान देखानाः (१।৮) द्वात्म। व्यवसः पृथक् भ्यक् नामा-क्षकारत्वन क्षित्व विश्वत्व वर्ण केन्यकरत्व वर्णः भद्धः वद्भः क्षित्व। कीष्ट्याः। द्वादः द्विकवर्षः। व्यवक्षकवः यूव क्षवे (क्ष्यूक्षांभिर्मः (द्वार एकः। वक्षः वृत्यक्षत्वावित्रिक्षः वारक्षः। वाष्टक्षः वारक्षः। वाष्टक्षः वारकः। वाष्टकः। वाष्ट्रकः। व्यवक्षत्वावित्रिक्षः वारकः। वाष्टकः। वाष्टकः। व्यवक्षत्वावित्रिक्षः वारकः। वाष्टकः। वाष्टकः। व्यवक्षत्वावित्रिक्षः वारकः। वाष्टकः। वाष्टकः। वारकः। व्यवक्षत्वावित्रिकः वारकः। वाष्टकः। वाष्टक

> कृष्टीशा कश्चिका। विषायक्रमा यका विद्यार ।

बाहर मुख्य। व्यक्त मिन वर सम्म । का

भावती भावत्व देवा विकायक्षण भूरवाक्षक भवर विकाश । १०० व्हार्य । १६ भावत्व । १

हरू वे कि कि का। । । । । । बुक्षा वि स्वयुक्तमाल, या ज्या ज्या प्रयोगित

वि एवाका भूकार नवर । ।

व्यक्तिश्रह प्रशास्त्र वा वार करवामाः वारम (१०००)। देखि सावारकम् (१९३०)। (२०व-४४)।

नक्षेत्री किका।

त्य विश्वरण हम्राङ्कः पर्दक् प्यक्षाङ्का यदनम्भवाभरत्ररङ्गाः

स्वात्र वृद्धाः कृष्ण वृद्धाः विद्वेष वर्षाः वृद्धाः विद्वेष वर्षः विद्वार व्याप्त विद्वार कृष्णः विद्वार क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः व्याप्त वर्षः वर

विक्री किला

चनविरु क्षनरवा शक्तिः शक्तिर्दशका विषयि चन्नरत्रवीषाः। —————

यमधारमाः स्थारमा विक्रक्रकूर्मारम् हितार विक्र विरविष्य ।

मिक्किल्पूरविक्रिक् व्यव ८वन देखालाः (११७७) द्वारम । वाशिष्ठां (०४०८) । क

नश्यों किल्माः

क्षीनः चका को मरुखागाविश क्रिक्ष् नकः स्वर्गा मयः समार्थन्।

क्षेत्रभृष्ट्रिक्त्रप्रविद्यम। जानिरकास्त्रका क्ष्मानग्रस्थ । १॥

विश्वित्र वृद्धी विद्धे न विश्व विष्व विश्व विष

व्यक्ती क विका

वृद्धानः विरवा अत्रक्तिः भूनिया देवधानस्य वा व्याक्रमधिमः।

ক্ৰিত্সব্ৰাজমভিধিং জনানাবাসমা পাতাং জনমুক্ত কেনাঃ। ৮ ৮

अञ्चित्राम अमेशवन्तामम् माणाका (१२१) । (७०न - ५न) ।

नक्त्री किछक।

আরিক্রোণ জভ্য: দুবিপ্রাক্ষিণপ্ররা। সমিতঃ ভক্ত আছ্তঃ । ১ ।

मणभी काशका।

विरविष्य (जाकार मध्यन हेटलन् नाहुन)।

পিৰা মিজ্জ ধাষ্ঠিঃ ৮ ১০ ৪

लामको (सर्गाकिविष्टे। देखान्यकार्ग्रहम् अमानक्ष्मी हानाः (१।००) चात्न । (स् व्यक्त, विष्यिकः विदेशक्षिते हेक्कि नाम्ना ह नर मामार लाममार मधू नियः कीषुनकर । विक्रण वामकिः गामकिः कड हेकि न्याः 'व्यक्त वक्षणा व्यक्त विद्धा क्ष्मिन क्ष्म विद्याः' हेकि व्यक्तिः (००० - २०००) ।

क्षामा किल्ला

व्या यक्षिय न्वनिष्ठ एक वामके कि दिए। निष्ठ को के कि

व्यक्तिः न्यानकः वेश्वानकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्थानिकः स्

सिहे न नवामत्रष्टि मक्क को व्यवस्थित क्ष्य के स्व मक्क के का मार (१००६) द्वारा । का कि नविश्व में का कि नविश्व के नविश

बानमी किछान।।

चारक्ष महास्व दनीस्वत्रकः एव पृक्षाक्षास्त्रमानि म**स**ा

मर जालाहाज जूममाङ्ग**्य वक्तप्रकामाङ्गि । ३२** ह

দ্রিষ্ঠণ বিশ্ববারাদ্ধী বিভীরমক্ষতীয়পুরোক্ষণ মক্ষম্ভং ব্রষ্টবিশ্বারাদ্ধী বিভীরমক্ষতীয়পুরোক্ষণ মক্ষম্ভং ব্রষ্টবিশ্বারা (৭) ব বিশ্বারাদ্ধী বিশ্বারাশী বিশ্বারাদ্ধী বিশ্বারাদ্ধী বিশ্বারাদ্ধী বিশ্বারাদ্ধী বিশ্বারাশ

। क्लिक किमाइज्ञ

नार्थ कि विक्रममर्काद्यादेकक्षक्षत्व विक्र मः (आक्राक्ष)

विद्यार व को क्वला (क्वको वाह्र प्रविच द्वावना वृद्धवार ॥ ১० ৮

सिने म् क्ष्मकष्ट्रमे मार्क्स अप्ट्रास्ट्रम् वेर्द्धा नुमिकाणाः (१।००) सारम। एव करकः क्ष्मः स्वार मृत्याक मृत्याक स्वार स्वार मिन्न क्ष्मः । म्हार स्वार मिन्न क्ष्मः । म्हार स्वार स्वार

ाक्क्षा किक्का

त्य पाइड किन्नानः मच द्वन्नकः ।

विकारका ८६ मध्यादमा समामाम्कान्यक ८भागाम् ॥ ३६ ॥

एक प्रवर्षा) व्यक्ति अवश्वास्त हो। व्यक्ति विद्यास विद्यम् । व्यक्ति विद्यास विद्यम् । व्यक्ति विद्यास विद्यास विद्यास । विद्यास व्यक्ति विद्यास । विद्यास व्यक्ति विद्यास वि

भक्षत्रणी क शिक्षा।

व्यक्ति व्यक्ति विद्या प्रमान आवकावार्या जवात्रम् । ১৫ ६

ण्डू वः देखि स्टिको व्यक्तिकारक्षा वाद्यो कर्षी वक्र म स्टब्स्यः दि स्टब्स्य, त्यरेवः मस चमकाबर मका स्मिष स्पू। कीषुरेनकरेवा। विक् का स्वीरिय वस्ति एक बह्न र देका मन्नाविकः वह वाहि (क व्यावायः देखः। विक निवः वर्षामा खाळ्यावावक (ववाः वर्हिषि व्यानीय छ व्यावना ब्यावना विवश्याति विवश्यात्र विवश्यात्र व्यावन्त्र विवश्यात्रि । > ० ।

(बाएजी क जिया। विश्ववामिकिका जिल्लामार विष्यामिकि विश्वाक्षानाम् । व्यक्तिमानन वात्र्वांतर व्यक्तिका व्यक्ति वाक्रवंतर । ३६।

किष्ठेय त्याक्य पृष्टी विकाश क्या विविधिका विविधिका वर्षा दिनामाधिका क्या () श्वारम । व्यक्तिः केनुत्वा क्वकू। कोनुवा निर्वशः नर्द्वशः (वनमार मत्या व्यक्तिः माकि विकिश व्यक्त वक व्यक्तीयः। कीम्यामार (वदामारः विक्रमानार वक्काई।वार। खवा विर्व्यवार वर्षियार याञ्चानार मद्रानाथिकविष्ठ भूकाः द्वायायर्था एविन वन्यप्रयास्तास्त्रा भविन व स्वृष्ठीकः (बाष्ट्रमर मृष्ठीकः स्वर कवार स्वकाती। बाष्ट्रमहा बाष्ट्रस्थामः ॥ ५७॥

मखलनी किका। वर्ष वृश्यात्रा मिटल ध्यक्षं भाव नविष्: ननीयमि ख्राप्तनावादाना

स्त्यागामाकपृष्टे। विषेत्र, नाविवाधकपूरमामक् याषयरक्षकाकाः (० ०) श्वारम । त्यवानाः **७९. ज़ब॰ जप्तर हिमाँ क्रम्ब वद्यः युवीवरह मः क्र्यः। क महि । मिविष्टः यस्त्र मनीविव मिक्टि** काकानार नकार। 'रमस्य चा निवकः खनरम' हेल्लारकः। 'मनीमा खनरमस्यका' हेल्ल ६कावः। कोवृत्व मवोवनि। (अर्ड वक्रावनाकाकः वर्षारकावक्रके।। कर्वक्र। रक्षमरम् बक्षर चर्चात्र चर्चिमहक्षा करमम। कीष्ट्रना नद्गर। व्यक्षत्र वर्षान वर्षात्र वासाम मिहक वस्त्रक्ष ए जमानाः जमाननः 'स्नार स्न' (ला० १ > ७৯) हेकि चनः सः। जिस्किनस्थितम्थलान वर्शकताः। कीवनगरतः। महः ज्वाम महत्व ज्वात महे वम मह ज्वातार । इति विवामक बीभावामक । (००व - >१ न)।

बहामणी किछका।

णानिक्निन्द्रकारका म नाहना नक्षम् छ ख्रीकारक हैसा।

वाकि वाह्रमं निष्ठा । वा चन्छ। वध् वि वीचिक्द्रान वि वाकान्। ১৮॥

ই অত্ত কুর্বো বিভীয়মই জনতি তি হৈ আ প্রহা ভন্ট প্রাঞ্জঃ প্রেক্তঃ দর্ম বৈশ্বেপত প্রাণ্ড হিল কর্ম নির্মেণ্ড হিল কর্ম করিছে। ভল্ডঃ ই অভ্যত নাংছে উক্ণানংছে দর্শনেষত বিভীয়েছিন আপশ্চিদি ভাদি ইমাং ভ ই ভাত্তা দাদশ পাচঃ। তং প্রাত্মণা অরং বেলঃ মই। ই জঃ কলাচন জরীঃ কলাচন প্রযুক্তনীতি পঞ্চ প্রতীকোজাঃ এবং নপ্রবাদ্ধক বিশ্বে ক্রাণার ক্রাণার গ্রহণনাত্রাঃ বলি চঁচু ইঃ ক্রিছু প্রাত্মনাত্র ক্রাণার ক্রাণার

अरकानियः नी किका।

भाव द्विभावकार मही रक्क जन्मा। देका कर्ना हिन्नगुन्ना। ১৯॥

ভিন্তো পারতাঃ আড়া পুরুষীঢ়ালনীচ্ছুটা ঐপ্রবাহ্বত, বিভীয়া পুরোক্সন্থ ইপ্রবাহ্ ইভাগাঃ (৭।৮) ছালে। পাদ উচাল্ডে। দে পাবঃ, অবভং কুলং চাছালক্সলং প্রস্তি উপাবত উপগত্ত লানাবং। চালালান্তরেল পদাং লঞ্চারোহতি। অবভ ইভি কুলনাম। কো হেজুরাগননে ভত্তাল। মহী মহতো ভাগাপুনিবা) বজ্ঞা মজালা সজাদে মণ্ বিভি ক্লামা ভজ্মতে কুলুকে বজ্ঞা আগান্তা কর্মে ক্লেড ইভি মুল্মুণান কল্ডে। কিঞ্ উভা কর্মা ভগতানামুভো কর্মে। হির্মারো অভ্যান্ত্র কামার্মাগক্ষ্ডেভার্মঃ। (১৩ ল - ১৯ক)।



विश्नो कं छ का।

विषय प्रत উनिहरूमात्रा विरक्षा व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था

धकविश्णा किका।

प। प्राप्त निक्छ खित्रण् (तामाकात्रिकिस्मा।

त्रना मनोष्ठ व्यवस्था खर व्यञ्जवात्रर ८वमः ॥ २५ ॥

अने जिन्हें। चिनप्रंताकृष् या वानिकाकाः (१।००) श्वारा। त्रमा मने 'त्रम्रिक्षः व्यक्ष्मं वाः' (मिक्र-००। हे जि याद्यः। त्रमा नने त्रवक्षः मिक्र-००। हे जि याद्यः। त्रमा नने त्रवक्षः मिक्र-००। हे विक्राण्यः। काम्यारा विक्राण्यः। काम्यारा व्यक्षः विक्राण्यः। काम्यारा विक्रः विक्राण्यः। काम्यायात्रकारः विक्राण्यः काम्यायात्रकारः विक्राण्यः काम्यायात्रकारः विक्राण्यः काम्यायात्रकारः विक्राण्यः विक्रण्यः विक्राण्यः विक्रण्यः विक्र

षा त्यो किछका।

भश्खबृत्का वद्भतक माथा विषद्भाषा अमृडाम छ छो। २२॥

विचामित्वपृते श्रावनपूर्वाकृष् त्य त्मनाम हे छाष्ठाः (१२०) श्रातः। हेन्द्रमा वृष्टिचित्वीहात्छ। वित्व त्मनाः ज्ञाण्डेहर मध्छाष् च्छित्रिक्तः नदीः ज्वन निव्वविक्रविक्रवेहः
विक्रिः हव्वि मंस्त भव्याः कोष्ट्रवः। व्यापः वनामः त्मिशः चाव्यायव्यव्याः
चित्रवाहः चः त्मिर्विणा मः ज्ञान्यायोगयोग्छः। क्षिक विचर व्यन्ति । वद्वन्यविक्रविक्रविक्रवे

ख्रुं वर्ष वर्ष वर्षाम वर्णान वाहर्ष वह वर्ष वाष्ट्रिया वृक्षा वर्षा वर्ष व्यक्तिक वाब यान्ताः बुक्का व्यापि। कोपुन्ना वृक्षः। व्यक्षमा वन्ति विष्ण यण (जार्ष्यत्रक्षण) व्यापनकः मान्याममा व्यक्षानक वेषार्वः । (००ज - ३२ ज) ।

खरशानिया कि किना।

व्य दवा मटक मन्यभागाधाक्र नावकः विश्वानद्वाष्ट्र विश्वाक्रद्वा

यगा चभष्य मत्या भष्टि अत्या नुभार ह त्यावनी नगरी। छः । २०।

क्षृष्ठीकष्ठा खिहुन् क्षा शावन्द्राक्षक् मूर्दा निवाकाः (१२८) चारम । एव वाचिवाः, युष्तर विश्वागत्राम विष्य मृद्धि गत्रा यव्यामा यमा कट्टेंच क्षार्क शार्कक । यहनवाकामः। देखार श्रेक्सरक्कार्यः। गोषुणात्र। वर्ष महत्त्व। (वा युत्राक्मसनः कास्त्रना कार्यम ष्वीद्वाराण वक्षमागांत्र स्वावतानात्र । निषाक्रान निष्ये एका खाद्यांकि विष्युः खटेख व्यवनार्भाष्ट्रम, विश्वा कृष्टारमाख्य दा, निश्वर कर्वाक यशानिक ना। वश्वकात्रार कीर्धः। "व्यक् द्याष्त्री श्वानापृतिद्यो यत्। खना अडान भवाव। क्यभंश ड: भूक्य प्रः। काम स्मयंश "र्षाक्रमर वकर गवः वजर महि भष्टर खरना यनः नुभनर बनर ह। खाराक्रमी वजा व्यक्षाक्षींम भागप्रख्या श्रृक्षप्र(७७)वः ॥ (७७० – २०क) ॥

क्टू स्वर्थी किखका।

युक्तिमित्र अवार कृष्त्र नचर शृत्र चक्रः । द्यवानित्ता यूना नचा । २० ॥

जिल्लाकमुष्टे। भाषात्री अञ्चाष्ट्रशाक्षक हैआशी हेडानाः (अ१७) श्वारम । यूना नयर्षः केकाः (यथार चक्रमामामार जया मनायः अर्थायकः वृष्ण् केर मकारमय क्रमकि। व्यक्तर मधार कृति वह । जलः वृत् १९९: विमानः । वृक्तवास्नामामाक वैकार्वः । २०॥

शकिर्ण कि का

वेटलि मद्रशास्त्रा विष्यिकः त्राम्यक्षिः।

. जिल्लिका । २०।

वेषूष्टरकाष्ट्रिं। भाषात्वी देश्वेदवंशभूरताक्रक् क्षेत्रां हर्का छ। (१००) क्षात्म । श्रिक क्षेत्र हिंदि 'क्षेत्रां क्षित्र क्षेत्र) हिंक भवतः । (१ हर्का, का हिंदि क्षात्म । क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र

मण् निश्मी किकि।।

हिरा दलमद्भाष्ट्रका के विकास किया विकास किया विकास किया विकास किया विकास किया किया किया किया किया किया किया कि

अव्याध्नाम् मम् अव्यागिरक्षितं। व्यक्तर शासामानाम् ॥ २७॥-

निषाभित्रकृती खिरे न श्रीवार स्वाप्त स्वाप्त

मक्ष्यिंगो किका।

मू ठ व्यक्ति माहितः महारका याति नर श्रक्त कर क ठेवा।

वर शृक्ष्मात महारक व्यक्ति व्यक

व्यक्षेत्रिक में किया।

च्या छछ हेस्साम् २० गास्त्रां य छ तिर (भाष्य किस्ट्राग्या)। रयर (य भूकत्बार महोल महस्यावार वृष्टीर हृद्धका ॥ २० ॥

পৌরীলিভিতৃতী এই প্ আদিভাবাতত লগিলারে বিনিরোগঃ। যজো দেশনামিতাতাঃ
(৮০০) ছানে। তে ইজ, আর্থো মঞ্জাং তে তব ০৭ কর্ম আলমাভিভিতৃশান অভিভিতৃশান
ক্ষাক্ষা। লঙ্ অভশান আর্থঃ। বে আর্থা উর্মারণ লোলরপ্রাভিভিতৃশান অভিভিতৃশান
ভার্মিত্ব বিশোলুমিভিভি ভিতৃশালি 'উভ্লির বিশোলালররোর' নরতঃ 'ই ০৮৮ লোপঃ
পরীমেশলের্' (শান তাভানণ) ই ভাতেরিকারলোপর। লোগং লোভৃথ্যজ্জীতার্থঃ।
ভীলুশম্বাং। গোমহাং গৌরুষক্ষ ভ মন্তিন ল গোমান ভং নিপ্রাভাগলকশোক্ষাতাং।
ভাতিক্রব সোধা কুল্ডে। কিঞ্চ বে মন্ত্রার মহীং ভূগিং তৃতক্ষন বুলুকান্ত লোক্স সভ্তি।
ভ্রের সমন্ত ল্লিট্ পুরিবলিকারলোগর। তেথি তব কর্মা প্রাভি লাল্ডাং ক্লিলুনিং মন্ত্রীর দলকার্থাং প্রভাগ ক্লিলার্থাং।
লাক্র পদার্থাঃ পুনির্বাল উৎপক্তভে লগজ্জারাং প্রজান ক্লিল্ডারা ভাং। বুল্ডীং মন্ত্রীর র

(य विक्याः (नामानियनर क्किंच एव छ क्षित्रा कृतिर द्वन्धि वामप्रसि स्वर्ध एक देखक अववर्गाविक विक्वा मार्थ प्रत्यंत्र के कार्यः ॥ (०० व — २५ व) ।

जरकानिक निश्वामाकार

हैमार एक मिन्नर क्षाप्टर महारा महीमा एकारख विष्वा खबुर्जिट ह खन्ति ह जानिक्रिक्किर (क्रवान: ज्याप्रकृष्ण । २» क

कुरम्पष्ठ। जगकी मानितानूरवाकृष् नायमरकामाः (७।७) स्थाता (व वेख, वेथार वामकीर विम्नर कुन्तिर सं कर का कर्या का ८७ कुनार क्षक्र त अवदन ममर्मनावि। कीमृत्रना (छ। वहः वहकः शृक्षाना। कास्मीर नित्रर। वहीर वहकीर। वर वचार व्यमा यक्षमानमा विषया वृद्धियाथा एकाटक किम्मारम एक कर व्यानरक हार ग्रामिक। कर्माण यक्षा व्यक्षिति वास्मानम् ना । किक (मनानः (मनाः क्षिक्षमध्मान व्यक्षमक्षि खर्बाख 'ह्निम गटबर्गि' (भार ३।८।६०) व छाट्याक भन्नः व्यट्याभः। क छान्छ। केर्माय व्यक्तिमा अर्था क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक महार । यहां अन्य भूवाहार निकार **छैदगर वे छर छ । को प्रमिक्षर। मनमा नरम्य मान्छिर महर्फ मान्छिः मद्धाना**-म्बिक्विविक्वात्रर। (को न्युक्तात्र । (०० व्य — २ २ म) ॥

वेखक्रान्य कर विखीत्रमदः नमाक्षम् ॥

खिश्मी किछा।

निकाण कुर्वित्रण एमामार भक्षायुक्तिमा अभाग्यामान अभाग

वाश्यक्ति श्वना : श्वाः भूरभाष भूक्षा वि सावाधि । ०० ॥

क्ष क छोत्रमहः क्षांस्र। क्ष्मात क्ष्मितः 'द्रशक्षक्ष्माक्ष छोत्रमहर्क्षिति क्षमा त्मोषी। असा अमिक (नोक्षः भू(त्राक्रहः मर्कार्शिवनिविधि (>७१ >। १) । हिष्किन भू(त्राक्रहः श्चित्रः क्षेत्रीरमाञ्चाः। এनः नश्चन्य बहुः युर्वाश्चरणः ऐक्यानः स्व नर्यायनमः कृ की दब्र क्मि। अश्वनाव का विमानिता खानाः अवानाः शुर्वा क्र क्रिया अवन्यक्षः (वावाः क्रि विकास वृद्धा चन्ने के अवामनपूर्वाक्षक । विवाद सामक निवाहे भर्वाः लावार लाव-क्रियर वावद शिवक्रा को हुना र्यामार। हरद महदु वसून वावर। यह व्यवीः क्रिक् ज्यास्त्री व्यवाद जिवक्ष नामवि भूरानान भूकाकि छ। भूक्षा नवना विवादि छ।

ह्याकर्ता कीवृतः वंद्यानको वद्याद्वं वनिष् इत्रविक व्यक्ति ववर वानक्षा वाकिक कर बार्षिन रक्षतिष्ठः नार्षिन रक्षतिष्ठः नेविभक्षणः स्वेकीवि स्विनिष्ठः। क्षेत्रा विरक्षेत्रानि रवन्नाक्तर' (भा काशात्रका विकासात्रका का किर्मा के क्रिक्र के (भाग्भराज्य) हेडि है नारमनः । (क्क-क्क्र)।

वकिल्मी किल्ना ।

कि कार बाक्ष विकार देव वेश वेश कि टिक्क नः । सूर्य विश्वात्र स्थाप श्राण । काण । ७३ ॥ केलंगात्रगण किलीया भूरवाक्रक्। गांषप्रका (१८३)। (७०० - ७३क)।

षाजिः में किका।

পাৰক চক্ষদা ভূরণাদ্ধং জনাঁং। অকু। দং বরুণ পদ্ধান। ৩২ ৪

खाइवष्ट्री भाषा देगदावक्रमभूरताक्रक्। मर्करभर्ष भक्ताकारत्वाविकीशास छंखाभाषामः काणांच मुखियारशांच कमता कार्यारक। एवं भागक (मानक, राम हक्का पर्यामम पर क्रुवनाख्यक्रमञ्ज्ञीन । क्रिश्रमाञी नक्षी क्रुवन्। । क्ष्वन्। भाषामः करवाणि क्रुवनाणि क्रवनाञी क कृष्यान् खः किन्छार व्याप्रशाहः। नर्वरमम्माविमः कृत्रवृशिकतानावामः कृषा वर्षक्कि (रम हक्षनाक्रणक्रेनोडार्यः। एकम इंक्रमः क्रमानकार्य क्रूप्रवाकः (र वक्रमः खर भक्षा वक्रगः १वाः । (००.च--०२ क) ।

ख्याख्यां किष्का।

खप्रवाप्तर (वनिक्छिंत (वनागाम्। ०७॥

व्यक्तिन्द्रशक्त् भामत्वी। द्वनावाविद्यो देवर गाँ दव देवनश्चक्वि व्यक्ति, वृगर व्रद्धक व्यक्ता क्ष्मा क्ष्मिन स्थम । ज्यापन व्यक्तिक मक्स । मधुरवन सेनिया लामन्द्रशाखानवगानिया । यक्क नेमकारक द्वारक



मध्यक्षकर। नस्मि हरीरिव स्क्राडिश्वंश। जर क्षेष्ठवा (११३६) जार (११३६) हिन्द (११३६) जिन्द (११३६) जिन्द (११३६) जिन्द (११३६) जिन्द (११३६) जार (११३६) जिन्द (११३६) जिन्द (११३६) जार (११६) जार (११३६) जार (११३६) जार (११६) जार (११

। किलीक निश्वासूत्र

भा न हेज़्डिसिवरव अविद्यासितः भनिष्ठा (वन असू।

भिन वथा यूनात्मा सरमया त्ना विश्वर क्षत्रकिणिएक समीवा n ०० n

शक्षित्रभी किखका।

यक्ष कत्र वेखक्षे क्षा अक्ष क्षा । चक्र क्षा क्षा कर्ष ।

वहें जर्मी क छन।।

खत्रविश्ववर्षेत्। (ब्राण्डिङ्गर्ग क्ष्यु। विश्वभाषाणि द्रोहर्गम १ ७७॥

श्रिष्षु । भावती देनपाय न भूति । ए पूर्वा, चर त्या विद्युष्ट (खयनः कर्षानि । निर्युयाकानि श्रीन्य । व्यक्तान्य विद्युष्ट । विद्युष । विद्युष्ट । विद्युष । वि

मश्चांखःनी किंशका।

खर्य्याक (बनकर क्याब्बर भगा क्रह्मिक्क कर् मध्यकात ।

বলেলবুক্ত ভ্রিভঃ লণস্থাদ:ফ্রাক্তী শালন্তপ্রতে লিনশৈ । ৩৭ ।

वमं जिल्नी किखका।

खांबाबना नक्रमम्प्रिष्ठित्यः यार्थः। स्वतर कृष्ट छ।क्रमाहा

व्यमसम्बद्धान्त्रम् । १९७३ क्षा व्यमस्य विषयः वर्षेत्रस्य ॥ ०५॥



जाकाक किश्वादिवानिया

नवारं र । जान द्या यणां महा महार । जान।

महत्त्व मत्वा महिमा भनगार७१६। त्व भङ्गे २ ॥ व्यामः । ७३ ॥

জমণ মিদৃষ্টে দে বৃহতীশতোর্হতো। আজা মাণেরপুরোর ক্। বাজ হারার দি হৈ ক্রা, সুবলি প্রেরম্ভি কার্যাের জগণিত ক্রাঃ 'রাজ ক্রমণা—' (পা০ ০ ১৷১১৪) ইন্ডাাদিনা ক্যাবেটা নিপাভঃ। বট পতাং দং মহাল লাগ শ্রেষ্ঠোহাল আদতেই শ্লেকাার হৈ আগতা, বট দং মহানাল। কিন্তু মতঃ মহতঃ লতঃ নিভাজ তে ভব মান্যা পনজতে লোকৈঃ ভ্রতে। তে দেব, দালামান, অন্ধা পতাং দং মহানাল। অভ্যাবে ভ্রাংলমর্থ মন্তুত্ত বুনর জিরাবরার্থ। (০০ল—০০ক)।

1 14 8 14 1 1 1 B B

विष्या अगा वर्ष राजान नवा (५१ वर्ष राजानाः

म्हा (क्यानामप्रवाः पूर्ताव्द्वा मिल् (क्या⁶व्यवाकाम् ॥ ॥ ॥

चामका अवस्था अवस्था दि १वी, हि गठार अवस्था १८नन वनमा वा घर महामणि। १८वर (१व, गठार वर भवानान (१वानार मर्या ८०१) । १८वर (१वन । वहा महत्वन। वहामी १०१। वहामी

भूर्याद्रश्व विषः च्राणिष्ठः नक्षकार्यायु भूतःभूकाः। नक्षरवर्षायाः च्याप्राणामक्षयप्रव श्वाविकाताव। विक् वााभक्षवाकामक्ष्मिकः (कााकिः (कवः। व्यय (क्याक्रमे \$ 41 (00 m - 8 · 4) 1

अक्डबारिश्मी किना।

साम्रस हैन एवीर निर्याष्ट्रमा ७१

यस्मि बार्ड बन्धान खबना खिंड कानर न दीविय । ३>।।

न्द्रममुष्ठा सुरुको। वाकिकामा भूने श्रविष्य । सम्ब देखि साम्रकः विद्या (मराम्रार) व्यक्तः महात्र व्यश्यि कारल कारल कारल कारायम वृद्धिः। हेन बनार्थ। पूर्वार व्याप्रकः व्याध्यत्रका अव व्यवीक्षण्यतः हेक्क्या दिवा हेर विश्वामि वर्कार्तात्व वर्षाम वर्षाम वर्षाम वर्षाम वर्षाम वर्षाम वाक्रानणखावीम क्ष्मक वक्ष्मक क्षाल, विकास । व्यापितका विकास विकास । '७० कार्गान राष्ट्राह' जना जुबि कवि श्रवमगह्तराम ज्ञान । अफकान जार्यः 'जानातन लटमचनकः' (भा० १) हो छ योगामाटबन्। स्वाकित्रना हेखब्छार बुहिर छूटमो विक्वक्रीकार्यः। क्षिकं वतः कारकं नर्शनं कारकं शूरत क्रनवारनं केदशक्रवारम क Cकला मह क्रिक्नोधिय वात्रभाम। व्हानशाटमकार्यः। किविय क्रांत्रश् म क्रांत्रिय। य**वा** चकांतर भूखावियु बाबबामकर्षकार्यः। 'वि बुरको' लक् राकारतम नगः मृः विवर । ख्याविश्वाववीर्वः । (२०व - १) ॥

बिह्यादिश्यो किक।

मिय्र ब्यः थि श्रुष्ठा मिय्र ग्रुप्तारः। **क्रुशाक्त्र**

मिखा बक्र (ना बाबए छावनिक्तिः निक्: शृनिनी छेड (छो: । ३२ ।

सूर्वाष्ट्री खिक्नुन वर्षाविकाअस्थ्यप्त निमित्यानः। कीशंकि कीनात्क देखि दक्षणाः सम्बन्ध हिं दिनाः, त्यारुषामः स्मः भाशाद निर्धा गणुक विष्कं कहा व्याचार वृद्धान्यार्थन विश्व भिष्ठ व्यक्षाकर वार्थाम प्रवादारिक मावत्रक अर्थः। अ। व्यक्षाविक्राम मुर्वाक दिविद्या दिविद्य केवरत्र क्या मरवाविद्याक कामक्र हार्याची । व्यवस्थान 'बारहार्डिडिड:'। 'बिनाबड हे' (ना॰ ०१० २०६ ०००) हेडि बोर्डः। 'बर्डिसर्गन ब्रुडिड' (भार्य ७। २०१) है जि पोर्कः निप्रति छात्। निक वितायम् छए मह ज्ञायक्तरं वांबक्तरं भूष्या । ज्ञायक्तरं वांबक्तरं । एक विताय वक्तरं ज्ञाविष्ठः एक विवाय निक्रः ममुद्धा निक्रः । (००० — १२ म)।

हित्रवास्थित विहे न वाविकप्रताक्ष्य। विषय (विषय हित्रवार्य विश्वार्य वर्षक्ष्य वाविकप्रताक्ष्य। विश्वार्य वर्षक्ष्य वाविकप्रताक्ष्य। क्ष्यक्ष्य व्यविक्ष्य विक्ष्य विक्ष्य व्यविक्ष्य विक्ष्य विक्षय विक्षय विक्षय विक्ष्य विक्षय विक्यय विक्यय विक्षय विक्षय विक्षय विक्यय विक्यय

खु जोत्रर एर्थ। खद्म वामणः मवास्तर १.

हजूक सारिश्मी स्विका। अन्यस्क जुलवा गहिंद्रयामा विज्ञान वीति है हेशाएक। विज्ञामका प्रसूक्ति वाह्य प्रमा चलाय निक्षान । १०० ।

स्व हर्ष्वदः देवस्ववसः । स्वाह स्वाहः 'देवस्ववस्वस्व देवस्व । स्वाह स्वाहः 'देवस्व वस्त स्वाहः देवस्व । स्वाहः विकार विद्यास्त । प्राहः । देवस्व वस्त हर्ष्य । देवस्व वस्त हर्ष्य । देवस्व वस्त हर्ष्य । स्वाहः । विकार विकार विकार विकार विकार । विकार विक

व्यक्षणारक क्षेत्रीशास्त्र 'देकी विकामित्याः' किहे बक्षात्रवीर्थः मः विकासार । कीमृन् वर्षिः । श्राक्षाः (चाक्रमः श्रीकः श्रीकृतः श्रीकृतः यक्र छ० छ० छ। मोर्चक्ताम् । भ्रमाक विविधी **अन्तिमार्थः।** नीतिहेन्यमा भवनाहकः। छत्राह यात्रः 'श्रवकारम स्थापनः निह्यमा-ू विद्यार्ख मर्क्य भाषाद्वी वा भानांत्रहाद्वी मा मीहिंदेम महिन्य । जिस्सा मा कारमा वा किविकि भेवां चिश्रांबर या चार (मार्मि जैडनामा चामचनद्रम अखित्य निदानचाम अद्र चारमा मक्कावार जममर नेनमान मुद्दे। (याकारता विकास किरा मी-वार्षि करनारकः दिहेः" (मिक्र॰ कार्य) वेडि । (८७वा ४१क)।

शक्ति वा वरमा व अका।

ইজবাসু বুচম্পতিং মিজাগ্নিং পুন্পং ভগ্ন।

व्याभिष्ठामाञ्चल अनम् ॥ ४० ॥

दमपांकि विष्रेष्ठे (प नाग्रस्का)। व्याचा केखनाधनक नुग्रा करण विक्रोता देशकानक्रव-अस्ता देखानास त्रामिका मिला। विकासकाता वासर भूवनर कन् वामिकान वाक्र वर मक्र नवाक्ति गर भागः क्रामाञ्च्यामि । (०० व --- ८६ क) ह

महिन्दाविश्यों किखिका।

शाविष्मां कृषिग्रात्वा विषाधिक्रकिकिः। कत्रहार मः स्रतासमः ।

वक्रणः विक्रण्ड नियाण्डः नर्साण्डिः छिखिछः व्यवदेनः त्रक्रणकारेतः क्राविष्ठा क्षकर्द्य मुक्तरका खुन्द छवजू । खन्दक्त्रीकारमन खुनानिमाद ज्ञानाः 'हेक्ट (मानः' (ना॰ ७।८।२१) इंचि छिण हेलाणः शास्त्रकृष् । किक मिखावक्राणो नार्यान स्वापनः বোভনধনাম করতাং কুকুড়াং। বোভনং রাণে৷ বেনাং ৷ (৩৩ল-৪৬)।

मस्डिचातिश्ली किथिका।

विद्या गणांखामान। हेखा मकुखा व्यक्तिमा ।

८४ ८४ ११ छ।

(लामार मर्व्यामानकश्रीष्ट्रवंश 89 वं

्र सुनीषिष्टे। नात्रका चिम भूर वास्त्र । एवं डेस. एवं निर्देश एवं चस्त्र हैं। एवं चिमा चस्टिमी, (सिक्षिक त्यसंह नवाद्यामार वमानवाडीशामार्थन ववाडायाया स्विध वात्रहडा व्यक्त खिकीरकात्काः वर खेलवा (२१३२) कक्वार वसः (२४१ (२१३७) महिवार व रवनातक (११%) व्याश्यक्ष व्या म हेए। वि: (७०:०४) अन्त विद्यक्षिः (नामार मध् (७७) व रे केखार्थमा अमामन्द्रभी प्रसः (११७०.) देवच (मनना ज्याप । (७०.च-८.१ क) ।

जाने हशातिश्मी क खिना ।

नक्रण विख (एसः मर्फः श्रीमञ्ज वाक्राञ्चाक विष्या।

व्यव क्षाः भूषा ७ भः भरक्षेत्री स्मृत्रक । ३৮ ॥

व्यक्तिक ता प्रकार के प्र (ए (मर्गाः, (ए माक्र अक्रम्भन, डिशानि (इ विस्का, गुप्तः वर्षः वनः श्रेषक श्रेषक प्रका याः भाषा मुक् अनः श्रेषाक्रम्कृषा भारताक्रमातः। देखा नामका देखी नामकापिया क्रम्यः जान जान शाः (पनन्धाः भूमा ७१ः मत्यको ह क्ष्मस क्ष्मसार (मनसार स्नोर्गः । ८৮ ॥

बाकानाकानी काष्ट्रका।

मिकायक्रमामिकिए चः पृशितीर छार मक्रकः भन्निकार ॥

स्टित विक् भूवनः खन्त्रनम्मिकः छत्रः स मध्यम् मिन्नात्रम् छत्त । ४३ ।

चरमात्रपुरे। जनकी मनख्यक्र चर्की त्रभूत्राक्रक्। देखात्री विकाशकर्ती, विकिश ऋ व्यक्तिश्वार পृथिवीर छार प्राणांकर मक्छः नश्राणाम जानः निकृ भूषनः अञ्चनन्त्रिक छन जन्म देखार विखान कान व कि शब् करत्र गमात्रावः क्र व काव्यत्राभि । (००क ४००) ।

भक्षामी किषका।

(महना भक्त कार्ता बुद्धकरका करहूको मूस्कारा ।

चन्द्रक क्षांत्र भक्ष हेस्य (कार्का ज्या २ ।

বাদ বিষ্ণুতঃ আতা প্রপাণভূতী বাহতজপুরোক্তন্। বো নরঃ খংলতে দ্রাণি খংগতি ভ্রমতে ভৌতি ভোত্তালি প্রকর্মেন ভাল পাত পদ্ধঃ প্রাক্তি ন্যান লন ধারি নথাতি ধরীর হি। ভাল আবাদ কল্পানান দেবা অবস্থা পাত পদ্ধঃ প্রধান বাদ্ধানিঃ। কাছুলা দেবাঃ। অব্দেশ্ধানি ক্রমাঃ। পর্যভালঃ পর্যানি উৎলব্ধান বিষ্ণুতি বেবাং তে পর্যভালঃ উৎলব্ধান ভিল্পান ক্রমান বিষ্ণুতি বেবাং তে পর্যভালঃ উৎলব্ধান ভিল্পান করেছে। ব্যাহ্রেরব্ধান ভর্মুতে। ব্যাহ্রেরব্ধান ভর্মুতে। ভাল করেছে। অক্সভর ভিল্পান করেছে। ক্রমান্যান ভর্মুতে। ক্রমান্যান ভর্মুতে। ক্রমান্যান ভর্মান্যান ভ্রমান ক্রমান ক্

वक्शकानी किका

विकारका विकार विक

मुर्बाष्ट्रहेशिकाक अवका भूरताक्षकः एवतः कावरण मकताः वहेवा। वा एवं पक्षताः क्षिणाः वहेवा। वा एवं पक्षताः क्षिणाः विकार कावर्ताः कावर्ताः वहेवा। वा एवं प्रमानः विकार कावर्ताः कावर्ताः वहेवा। वर्षा कावर्ताः विकार कावर्ताः विकार वावर्ताः विकार विकार

विश्व व्यक्त विश्व विश्

विभक्षे कि का।

नित्यत्वताः मृतूः अवध् स्वर त्य त्य ज्ञानित्य व केन क्षति।

(य अविक्शिक्षा केळ या यवजा आनकाश्विविक्षि आवश्वभू । ४० ।

Б्युः शकाणी किवा।

(बरवरका। वि व्यवमः विकासिकाश्यक्तमण अनि कानमूक्तमण।

व्यक्तिमामानम् विकर्म् प्रत्यस्म्हीना कोविका मासूरमकाश । ८०॥

ষামান্ত দৃষ্টি। অপভী সন্তিপ্রেছত পুরোক্তক। যে প্রিডঃ, তি নিশ্চিডং প্রথমমূল্যবিষ্
যাজ্যেত হৈ যজার্ছেলো কেনেভাঃ ভমুন্ত হং ভাগমরিছে। মন্ত্রণ করিল প্রের্মাল 'মৃ প্রের্ণে'
ভুলালিঃ অভাক্রজানালীভার্তঃ। ভীলুলং ভাগং। অমৃতত্বসমূলপ্রথমিভার্তঃ। কার্যালারপ্রের্মাল
ভেবেন নির্দেশঃ। আব ইব অনন্তর্মের উদরানন্তরং লামানং কর্লাভি প্রকালায়াভ লামা
রাক্ষ্যমূল্য ভং। বৃর্ণিয়ে বির্ণামি বিভারম্পি। ভড়ো মান্ত্রেভাঃ ভীবিভা জীবিভালি
ভীবলালে। বৃর্ণিয়ে বির্ণামি বিভারমন্তর্মের প্রাণিমাং কর্মাল প্রের্মেঃ। ভীলুলালি
ভীবিভানি। অনুচীনা অনুচীনানি অয়ঞান্ত ভাক্রন্চীমানি রাক্ষ্যমূল্যভালিভানি ভ্রম্বার্মির বির্ণামির ভাক্ষান্ত্রিত। ত্রেবেভার্তঃ । তেল নংরক্ষা প্র

क्षि टेनच्यावचकक्ष्मं मकः नवारक्षाव्यव वस्त्रवनः व

शंकशकानी किष्मा।

क्ष माञ्चभव्हा बृष्ट् को बसीया वक्षांत्रः । नवनाद्रण स्वकान्।

हा बढ़ामा निवृतः भकामानः कविः कविभिन्नकि अयुवा । १६६ ।

व्य नक्ष्य नक्ष्य विद्या कि विशेष विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विश्व व

वर्ष्ट्रभकामा काळका।

इस्त । इस् च । उन बाद्याणितान्यम । इस्ता वामूनिक हि।

किनवामगृशेटकर्मि वाम्रव केटावामुखाः था । अव एक दर्शानः मद्यादवाखाः पा । ८७॥

्र बिक्ष वास्त्र वास्त्रांखा (११४) । (७० च -- ८६क) ॥

मख्नकानी किशा

विक्र स्ट शृष्ठककर रङ्गण ह तिनाममन्।

विवर मुकाठील नावबा व दन म

त्व वर्ष्वस्माष्ट्रिः नात्रस्वा चान्ना जिल्लाक स्वत्या । वित्यत्य वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र म्हास्त्वा । मेह्न । भूकत्यः भूकत्यः भूकः भूकः भर्ष्यः नवाहादः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्ष्यः । भूकत्यः भूकत्यः भूकः भर्षाः वर्षाः वर्षः वर्

बहर्माणी किया।

बला युगेक्या कुछा गान्छ। तुष्टम्ब्रिः। जान्नाक्र स्वयंक्री।

कर श्रीष्ठवातर (नमः । ८४ ।

व्यक्ति परमात्रविद्यारम् वस्य देखि नायाणयण मान्छा देखि। एव वर्ष्यो वर्षनीरम्, दि नामणा मान्दछो म व्यन्ति। वर्षा वर्षनीरम्, वर्षः मान्छा मान्दछो म व्यन्ति। वर्षा वर्षावर्षायाः मान्दछ। वर्षः वर्षः वर्षायाः वर्षः वर्षः

अटकाववडी काछका ।

विवस्ती जन्ना स्त्र्यवाद्यार्थिक भाषः भूकाण् म्य सः।

च अर मम्र प्रमानामका स्वर ख्यामा जामको नार ३ ०३ ॥

स्विक्षि विदेश देखरायका। नव त्रमण्ड राया या यकार ना नत्रमा विद्धा व्यापा विद्धा व्यापा विद्धा विद्धा वा महमा विद्धा विद्

भारमान द्विष्ठामानप्रभागकामार अवशि क्षेत्रे आहर बहुद व्यनद्वर आर्थार। खानमा अववश म्बर नवार एखास्वर जामकी नकी जाक न्याविष्ट्रकर नार जनार ज्नाव। कीवृत्तर नारः। विचि वर्ष। भुक्षाः भूकः दुश्यनकारम ब्यामिनीः एक श्रेषाः क्रियांगीकि श्रेष्ठिकावः। म्बाक् मबीहीनिविष्टित्रत्रिम मह (काषाः। निवद 'निवम माटक' 'नुवावि' (भा॰ कार्यं) देखाविमा (ह तकारवनः व्यक्तकान वार्यः। नतमा 'ऋ गरको' छेनाविरकार्मकाताः। 'नतमा भविशे हिष्डि वाचः। स्मर्भ् पर 'स्टब्बा खर्का' निर्वादार 'अपिक" (পा॰ ৮/२ ৪৫) हेकि मपर। श्रापः भाषी । भा सक्रापे चन्नः चक्रन्शकाम्मा भूषाभमः। कः करतारक्रम् । वि भ्रम्भवन (পा० २ ६ ४०) इंडापिया (हु त्यार्थ क्रथर। ज्यांमी 'शारपाद्य खन्नार्थ ब नां कांत्र क) हिक कीन्। नाद 'हरना भा मुकि, । (००ल-० ७ क) ।

। ।कछी क छिष

व्यक्ति क्रिनेवा विकास मार्थिया न सार्थित का स्थाप का विकास का विकास का स्थाप का स्थ

क्षरममस्व पद्मम् छ। ज्यार्था १ देनचा गत्रः देनच्या क्षिकास्त एवाः ॥ ७ ।

नियामिळाष्ट्री तिष्ठेष देवचानती। त्यनाः देवधानता विस्पत्था विखा व्याप्तः व्यक्तः व्यापर मू छ१ भूत्र अछात्रर नर्सकार्याषु भूतः भवर छ गणि व्यापन गामक्षा निविधासी निर्यमगाही। न्यनः व्यनिमिक्रहारक। भूत विकि शब्दक भूदक्ष प्रदेक्का कर। जा पर निलाटको व्यवादको। व्यवाञ्चका रमनाः धानः टेनमानत्रमत्र्यन् व्यवद्वत्रन्। कोन्नमनिः खानकामनत्र विभाव । किमर्व व सूप्ता टिक्न का किन विवासमा (क्यांड्सा (००ल-५०क)

धकमडी किछन।।

किला निवनिमा मृत देखाती बनायरह। छ। त्या मृज्' के प्रेष्ट्र विष्टु विश्व । ७) ।

क्षमाक्षे के अविष्या में भाषा थी। यहनिकाशी क्रामाद का क्ष्मामा । की क्षामिकाशी केर की क्षेत्रमं (वर्ष)। यूट्या विश्वकान् नियमित्न) नित्यद्यं वर्षा मानव्रक्रको वियमित्न) वर्षा । का त्यो जाहरको देखांडी त्यावयान्। केंद्रत्म कत्रागटक मध्यादम कर्यान था। मुद्धक विद्यात विवश्वक । (क्वलंक १०० ।

बिन्द्री के खिना।

है भाटेष भाषका मद्राः भवगानाटम्बन्धरम् । व्यक्ति स्वयं । व्यक्ति । व्यक्ति

दिन्त विष्यः । एवं विषयः । एवं विषयः विषयः विषयः विषयः । विषय

ত্রিশপ্তী কণ্ডিক।।

নিখানিত্রত্বীভা দে ত্রিইছে ইব্রেনেবভাভিত্রঃ। দে মন্ত্রন্ধন্ন, যে মরুভো প্রথিষ্ট ভালিছের ব্রহ্ননরণে কর্মণি ভা ভামবর্ধন্ জহি বারম্পেভ্যাদিবটোভিত্তে বৃদ্ধিন ক্র্মন্। ছে ছিরন্ধ, ছিরনামকাখায়ত্ত, লাজরে লভ্রনদ্ধিনি যুদ্ধে বে ভামবর্ধন্। মে চ মরুভো পবিটোপ পরাং পণাস্থ্রভানামিটো প্রভ্যাভ্রণেভ্যামং যে ভামবর্ধন্। মে চ বিপ্রাঃ বেণাবিমােক্রভো ন্নং নিশ্চভং ভামস্থ মদন্তি উৎকর্মন্তি তর্পপ্রতি বা। ছে ইব্র, তৈর্প্রভাগে প্রপাণ্ড পণল্ডিভা লন্ নােমং পিব ম্রুষভীরাদিপ্রতং নিবাভ্তেঃ। অহিবভা ছন্তেভাবে 'হমভ ড' (পা০ ৩ ১ ১০৮) ইভি কাণ্ ক্রুভর্মণাস্থানাঃ। ভারন্ধন্। বাং দার্মনাভ্রতাবিশ ভিন্দাভ্রমণা (পা০ ৩ ৪ ১১৭) ইভারিণাভ্রতা প্রতিনামা। ব্রহ্মবাগায়িভাভাবিশ (পা০ ৮০১০৬) স্বামিন্তির্যামন্ রণে ইভি 'বছব্রীহো প্রক্রডা প্রতিপদণ্ (পা০ ৮০২০১) ইভিপ্রিণাভ্রমণ ভ্রমণভ্রা (বার্ক্রডাভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ বিশ্বাভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভর্মণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণভ্রমণ ভ্রমণ ভ্ন

हजू: भष्ठी क खिला ।

जिल्हा डिका नक्ष्म कृषान मक्त खिलाई रक्ष्माकियानः ।

जन्दिनिका मक्त क्षितिका माना क्षीत्रः व्यवस्थिति । ००००

(भोतियोखिषुहै।। (४ हेख, पर वदान यनाक प्रतिकी प्रक्रियोः पार्षार्नि जुक क्षकायः। कीवृत्याकः। मद्दम कृतात्र वत्रवायात्र त्यम्बर्धः कीवृत्यः वरः। विश्वः वेदङ्के । वसः खन्म ७ विषे विष्या करमावाची ७ विषे: 'विषय वार्ज् क' (भा वाकाक) वे कि विरमा जून । वहना क्यांमा नक्ष वनम्बिक्कि विकि कृतिके किया मा वास मुखबर केषु विक्रम मुखबिक क्रिक् बक्रकार्थि जन्दम। जिल्लासान्।विकि (नवर। हैवर हिल्लानानार वर्षणानीन-विकार । यर बचार बार्जाकिकः क्विकाला बीसिक्कर क्षमर शर्क वास्क्रिक्को । वदान वित्रवारः ॥ (००व-००क) ॥

शक्ष्यश्ची किका।

चा ज् म देख मुख्यमभाममध्यानिक। वदामारीकिम्बिकिकिकि

मायरमन्त्रेश भावत्वी। जू देखि निर्भाषः किकारहमः। 'बहि जूज्य-' (পা॰ ७।०।५०० है विकाशिया एक मर्श्विकानार मीर्थः। युवायायाच्यकाणार भाभ मनार क्षा युवासा । ८स युवास्य (ए वेट, पर माध्यान क्रींछ छ क्रिक्श का नागरम्हरार्थः। नागछा छानाकमहमत्रमान-(वर्गक्रम्(वर्षः श्राप्त वीकार्यः। कोष्ट्रमञ्चः। मधीकः महत्वीकः केकिकिः द्वष्याशिक्। व्यवदेवः समाधिः महाम्। (याव्याः समाधि न महायुष्ठात्व । (००वः - ७०वः) ।

वहे नहीं कि का ।

ৰমিজ প্ৰভৃতিৰভি বিশ্বা অসি অপুণঃ।

जिमको विषक्तिम वर पूर्व। जक्रज्ञाः । ६६

म्रविष्टे (व अरमाने नवा। वक्कीनरकावदका। अकृते। कृतिर्वित्ना रवनार वस वा रक ब्राकृतियः वास्त्र मर शामा या एकपू ब्राकृतिकृ एव वेस्त्र, पर विचाः व्यक्ताः व्यक्ति लबाध जिल्ल जिल्लिकामि। किक वज्र वर विवस्तामि विवास मधीन विश्वन स्विट्स विवक्षि विवस्था जन्म जन विवस्थ विवस्थ विवस्थ विवस्थ विवस्थ । क्षेत्र विवस्थ । क्षेत्र विवस्थ । क्षेत्र विवस्थ । माकि बार्मा क्ष्मिकिर्याश एक क्षमक्षः इष्टोबान्स्केकामिक्रा क्षिका क्षमिक्रा अन्य क्षेत्र - करक) । १ कर्मा - करक): १

गलम्ही किका।

वा एक क्षत्र प्रमुख्योग्रपूर क्षांची विश्वर म मास्त्रा ।

विश्वारक व्याप्त समझ मस्य मुख्यर महिरस प्रमिन । ७९ ॥

एक इस. (कानी छावापृथियो एक छन्न वनस्वी प्रकृत व्यक्त । छावापृथिनीहा लाकाष्यकार वह वस्त है छि छावः। कोष्ट्रंबर छन्नर। छूवन्नकः व्यक्त प्रतामाविक् संस्थ । क्ष्माविक विकास विका

नमेभष्ठी क लिका।

ৰজো দেবানাং প্রস্তোভি স্থল্পানিভালো ভবতা মৃতরন্ত। ভাবেহিন্দাটী

स्यविक्षत्र व्यापण ्ट्सिक्स स्विद्यापिक शांप । जावित्वाका । कि ।

कूरमण्डा विदेश, व्यामाखा (आड)॥ (००व ७४क) ।

अर्कानमञ्जूषिणमा क्षिका।

वित्रवाधिक्यः श्रीवजात्र नशाम त्रामा नामित्नी व्यक्तल केन्छ के ह

खत्रकाख्युरे। जनको निव्हत्ववता। (व निव्छः नक्षण धनिवतः, नात्विः नाजदेवतः व्याद्वाकः नवः नवः नवः वाद्वाकः नवः विक स्वाविद्वाकः विक स्वाविद्वाकः विक स्वाविद्वाकः विक स्वाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विकारकाविद्वाकः विद्वाकः विद्व

बिख्यः वित्रगंगमिकिना किखा यक मकामकः यदः 'वित्रगा विकत्रभीता बिख्या ब्यामी यद्धिक यो 'वित्रगर क्याविकाणि विकत्रभीताः क्यकोकि यो' (निक्र- २।२०।२२) देखि याः प्रतिकः । विक मगरम मगेत्रस्य मगठतात्र व्यविकाण क्य देखान क्याव व्यविक गणान । विक मगरम मगरम मगरम मगरम मगरम मानः (गावचाक्रमोण के क्यां। व्यविकाण क्याविक मान्य क्याविक मान

मश्रीक्षित्री किश्वा।

প্রাক্ষভাং লাষ্ট্র। বিষ্ট্রপূ। বাষ্ট্রপরভাগে পঞ্চলন গড়া দে প্রতিষ্টান্তে এবং লপ্তরণকঃ
পুরোক্ষভাং লাষ্ট্র। বাষিতি বিষচনং পদ্মীযঞ্জনানবিষরং। তে পদ্মীয়ঞ্জনানী, বাং বুবরোঃ
ক্ষুভাঃ লোকাঃ কমিরে বিদ্বালিঃ চুর্নীভূডাঃ: ফ্রি বিদারে কর্মকর্তার লিট্। কীমুলাঃ।
ক্রানীরা ক্রুটা বীরা জ্ঞানোত্তনা ক্ষিত্রো বেঘাং লোমানাং তে প্রবীরাঃ 'মুপাং ক্লুকু' (লাক্
৭ ১০০৯)ইতি জ্ঞানা যাজানেলঃ। তেচরং নির্মালাঃ। অপ্রের্মুভিঃ ক্ষুভালঃ আ্লাঃ অভিনয়ক্রেণ 'প্রাথভিঃ ক্রিনীভাবনাপালিতাঃ অভিনুথতি চহারঃ পর্যু।প্রেলনমলামর্থাৎ' (কাক ৯০০০)
ইতি ক্রাভ্যান্ত্রমান্তর্মুভিরিতি বছরচনং। অধ্বর্মেতৃভির্মীভিয়িলেবৈঃ কুলা ইত্যর্থঃ চ
মন্ত্রন্থত্তঃ মধু নিপ্রাভ্যান্ত্রপম্পকং ভবভঃ। এবং প্রবীর্মের পদ্ধীয়জনামৌ লন্ধোরা বাষ্ট্রান্ত ।
ব্যক্তি ক্রান্ত্রিক বারুং তে বারো, নিযুভোহ্রান্ বং বহু বেববজনদেশং প্রাণান্ত্র বার্ছা ভব্রের্মিত বা। লোমভিমুবং লোমনান্ত্রং বা ঘাইভির্ম্বঃ। বাহা ভ মন্ত্রাক্র

वक्रविष्ठिको क्षिक।।

भाग- केशावश्चावतः वही वक्क अन्त्रहा। केवा वर्षा विद्वारा । १०० १ - व्याद केटलिक वर्षाताचा (२०१२२) । (२००४—१२४) ।

विनश्चिक्वी किका।

क्षाचारत्रावाकारमञ्जू क्षा कमन्त्र क्रियारण। त्रियारणा भवस् व्या ॥ १२ ॥

जिन्दिकियों किथिन।।

देश বাৰ ধ্বৰ্ষ আগভাত সংগ্ৰহা । মধ্বা মঞ্জ ত সমঞ্তে ॥

তং প্রজুপারং বেনঃ। ৭০।

देश (चित्र वाषाखा (७०१००) छः अष्मवा (१५२) जदः (नगः (११७७) हेखि एकः अष्टोरमास्त्र ॥ (७०५ – १०म) ॥

চতু:দপ্তভিভনী কণ্ডিক।।

ভিরশ্চীদো বিভভো দ্বন্ধিরেবামধঃ বিদালীভদ্পরি বিদালী ৩৭।

(सर्छाना जानमस्मान जानस्यमा जनसार धन्निः भन्नसार । १०।

् अव्याविष्ण् है। विष्टे न जानव्यस्थित । जातव्य निर्मात्रः क्ष्मणार्थां विष्टः विष्टः विष्टः नव्याव्यां विष्टः विष्टः नव्याव्यादः नव्याव्यादः विष्टः विष्यः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः

(का॰ शहात्र) कालाविष्याक्ष किलाहित्याहित । विवाद विवादिताला विवाद वनगर क की वाकि क सन्तिमामारका कथा निवास का करा कि सक्ती में कि विक् बन विकास कि विकास कि क्षेत्राकृषिकि (वयः। क्षिन् वनाशनित्त (मायः अक्षितः नन् वनाशिवतावयः नागीर खिलांत ह जानीर । विकास हारवी । छेलात विवानीविकीकातः धूकः । किक खरेखरक नवार्थ। अब्द्रम्माध्यमोग्रासायकणयागरमा ८त्राकाया ज्ञानम् ८त्राका ज्ञानम् अव्याक्षमाध्यमे नेव्यर त्यामः वयक्षि वासम्बद्ध Ce (श्रद्धावाः त्मामामामुखाः जामन्। 'मकादेव खाकाः खावान्ततः' देखि अट वर्जनवी व वर्ष शायका ख्वानात नवार्याः भाषतमञ्जनक्षणक्ष्यार्थमाः नरका मन्मामः वहाकः खेरकृषे। जानन् । व्यावामारवम्बार्यम नर्वाष्ट्रम वक्षारेष्य विष्ठ होष्ठ वावह । 'अकार्रिवर अक्ष व्यावह विष्ठ विष्ठ वा क्षिक वश्राप्त खळानः व्यवसार व्यवसार व्याप्त व्यापत खायिकः खायक्ष नान द्यामान खत्र कक्षक का मन भत्रकार भत्र छ र क्रष्टेः खानीर। यथापिट क्षिन खर बााया। जवार अनिद्यामार स्थातभीनार मत्या जकः भूत्र्वात्या मुख्यः जित्रकीमः विजयः विष् डः मन् किः इत्माकावयःचिर वामीर উष्ठाशिविवामीर। विविधि विक्रिं। 'बिहाबीमानागाः' (পा० ৮।२ ৯৭) हेकि श्रुडः। क्षि ल द्राष्ट्राः (ब्रह्णाबाः एव्रह्णा विष्वेषिटकावकक वार्वावका जानीर। वाकारब्रेनकन्छनः। खबाह व्यक्तिः 'स्वाक स्ना आका माम्बर्क हिर्मार मांग (गटनामाः गर्नाः अवाः अवा निक्कि देखि। व्यक्त त्रमादा यहिमानः वाहान्यावाक्त जानन् निष्धानांवर्षम । क्षिक चवान्नांमण्याकः ज अन विष्यः ज्यवस्थाद व्यवस्ता व्यमिक्षा व्यमिकः व्यम्पार्गाक्ष्म्यः वम् नत्रकार नतः छरक्षः वर्णनवार्यान दिवसमार कृष्टिवः। खरणाख्यः हारकाणाव्यक्ति 'चर्मा या चाविष्ठा दिवसिक्ष्युभक्तिमा म देव (एवा अमेखि म निरक्षा अरववाम् बर वृद्धे। जुनाखि (हा॰ १। ३।७) हेखि। अवावााषाना अ बा।बा। वानवानीविक नक्षा कि वा। प्रश्राप्त श्राप्त श्राप्त एक (ब । ।१।३१) वस्तू ह इसामृहः नर्वास्त खदा गामनानी विक मित्रसम्बद्ध धनकार धनत्रामस्य मिन्स निस्नी समितिसास्य । स्वायप्रध्य व्यविष्य पार्षित व काम छक्तः। मगरमा (ब्रह्मः अवगर यहानीविक पार्षित पूर्वान श्रीाष्ट्रकर कर्ष्यांकर। अवमनिष्ठाकामकर्षाण कृष्टि एष्ट्रमाकृषा ८७वाः चकारीक्रमरम देनवामाह खियणीन देखि। এवामविक्राकामकर्षां नार द्राणां त्रव द्राणाः कार्गावर्ताः विश्ववानि विख्यः विख्यः मन क्रियण्डीमः क्रियानगण्डिका मर्या ज्रिकः व्ययण्डानीष्ट्रनित्र हानीर । व्यात्रीमानब्रामनरम्बर यादिकार्यः। खर्वन निख्या इ द्वरकामा देखि। स्ट्रिक् मार्गान्त दक्ष्य द्वरकामाः द्वरकामा बीक्कुक्क कर्षाता विवासीयः कर्षाता क्लाका के नाः कानम्। व्यक्त महिनामः महारका विभूगा विश्ववावत्या त्कामा। जामनः महिमान हे छि चार्थ हेर्यानहः। अवर बाबाद्वाधीश्वसंह नर्कर व्यवस्य । अर्थावन (कार्केशकार्थराव विकाशः केल्यायिकार्यः। अर्थारकार्काकार्यः। (मार्चर्या चमाप्रः कामा अग्रकार्यकार्यकार वात्र विकृष्टे कागीर । अप्रक्रिः अप्रक्रिया (काक्ष्म भवाषा भवः केदङ्गेष्ठः (४)कृथानकानीमः (कानावानकः कृष्णवानिकार्वः। 'विकास পরাবরাজ্যাং' (পা০ ৫ তা২৯) ই ভি প্রথমার্থেই স্থাতি প্রভাষিঃ। 'অস্তাতি ৪' (পা০ ৫ ৩ ৪০) हैं अध्यापन अधिवादिन । 'जञ्चा इंपर ने संस्था देव ने स्थान । इंग्लिस के दिख कि दिख । (००० - १९४) ।

भक्षन शिष्ठको क्षिक।।

चा द्वावनी चर्ननम चर्मरच्छाकः यद्यनगन्ता चरात्रव्रन्। द्वा चर्मत्राक्ष

भित्रीप्रत्य क्रियां न वाक्ष्माक्त्य हरमाहिखः ॥ १० ॥

ভমের বৈশানরাশ্যং ভোজারং প্রমান্তামং টোটি। বিশামিত্রদৃটা জগতী নৈশ্বনর্থনৈত্যা। যথ 'বলা জাতমর্ণীত উৎপল্লমাত্রদেনং বৈশানরমপলাংপথিনা: কর্প্রশ্রেষ্ট মঞ্জানা জ্বারন্ধ কর্প্রশি ছালিভবল্কঃ। তলা ল রোলনী জানাভূমী আ লর্জন্তঃ অপূণ্য প্রম্নতি মা। ছাবরাণাং প্রস্তরালে তত্বপলব্ধেঃ। ম কেণলং রোলনী কিন্তু মহুৎ-প্রম্নতি মা। ছাবরাণাং প্রস্তরালে তত্বপলব্ধেঃ। ম কেণলং রোলনী কিন্তু মহুৎ-প্রস্তৃত্ব মঃ অন্তরিক্ষমাপুণংস্থ্যাত্মনা। তৈলোকাং জাঠরাত্মনা প্রিভারত্যার্থঃ র গার্হপভার্নীয়াং লোকত্বং প্রস্তৃত্ব (আরুং বৈ লোকো গার্হপল্লা) দৌরাহ্বনীয়া ইভি র উজার্থনের বির্ণোতি ল ইভি। লোহনির্পর্বায় যাগান্ত্ম পরিন্ধিতে লর্প্রভাহত্তি-প্রশান্তি লাহান্ত্রীন্তালির প্রকর্মে নাম্বান্তালভার লভতে যণা ভর্মত্ব বির্ণাহিন্তি নাম্বান্তালভালত লভতে যণা ভর্মত্ব বিরাহিন্তি নাম্বান্তালভালাত লভতে যণা ভর্মত্ব লক্ষ্টার্ভঃ চনোহিতঃ চন ইভান্নামেতি যাক্ষঃ। চন্দেহ্নায় ভোগান্ধ বিভঃ দর্শক্তাপ্রশান্ত ইভার্থঃ। (৩৩জা—৭৫ক্)।

वर्षेन अधिका ।

छक्र्रविक विक्रा का सम्माना हिला शिवा। व्याक्ष्म देवतानिवान कः। वंद्ध ॥

. मखनश्रकिक्रो किका।

छेन नः ज्नरना नितः मृबस्यम्बक रमः संमुखीका क्रवस मः॥ ११॥

ं भूट्याखपुष्टी देवचंदमधी भाग्रखी। (य अप्रष्ठं मत्रवहीयक श्रीकांपटकः स्पनः श्रीकांश विष्यदानाः एक त्मारकाकः नितः উপশ্वत मभीगमानकाविषादस्य। व्यवा व त्मार्वाकः मुम्डीकाः स्वक्ताः अवस् । (वास्ताः मृडोकः स्वर (वस्तारसः। (००म-१९क)।

ष्मित्रश्रुष्टिक्रमी कंशिक।।

শ্রকাণি যে মতয়ঃ শ৺ু পুতাশঃ শুম ইয়র্তি এপুডো মে অঞিঃ।

व्यानाग्र शिक्षां काक्रभा रहा महत्वा (मा व्यक्षा १४॥

शक्ष छः महत्रानां । (इ यक्ष छः, खन्तानि यक्ष रामाणामानि श्राप्ति वर्गाः वि वा (नामाक्यानीनि (म मम प्रज्ञानि। (ठानना वाटकार्या निरम्व छाज्यतम्ब व्यञीत-भागाञ्चलि मर्नरमञ्जानाणादा भरमञ्चरेत्रम छानी छ छ। सः। भणमः भगमसूखनाः खाउटबार्श मर मम प्रापाद नातिकाः कार्जा गर्क ग्रापामिक छातः। किश्र मा मन्नी क्षाकृष्ठः क्षकर्षम पुष्ठः व्यक्तिः वक्षः हेव्रवि शक्तिवाव गक्षाःक्षिण। म क्षिक्षण इंडार्वश की प्रमः । खन्नः (भाषत्रिक मक्त निक खन्नः। अख्य गम्म त्राक्र मांहा प-खरवा माखी छार्यः। म रक्ष्यमः इनिवामी नार मनीवर्यम शखनार **ज**िष्णु जानामरख व्यार्थप्र रक्षमाना यानि उक्था उक्थानि जा जानि (काळ्नळानि मार श्रीकिश्रीक्षि कामप्रका ह्यां छि । अभाक्तां छ या छ।। किक नार्याक गिमा है यो हती वार्यो पाछ यहां छ-মুখং ষহতঃ মাং প্রাণরতঃ। অভ এবাখাভিগ্রবামিভি ভাবঃ। যথার্থান্তরং। একাশি मक्तः श्रुकाः लागाः शक्तकः कप्तिः लागाकिववशाया ख्यः मूध्यानः এखर गर्वार यम षर अर्थाभव्रिक्त व्यर्भाष्ठ উল্গাময়তি। নিজস্ত হৃতঃ লমানমন্ত্র । ওমাঃ 'পবিলিবিভাষ্ডাঃ किए' (छेना॰ ५।७८२) देखि मन् शलायः कियाना नाकानः नियानाश्वानासः। अखि कम्मासि त्रिभूगिष्ठ) जिः 'व्यक्तिमित्रिकृष्ठिष्ठाः किन्' (डेगा- ८,६६) देखि किन् श्रणात्रः व्यक्ति। पाष्ठः । १४ ।

क्रदकानानी िष्ठभी किष्ठका।

मय न विश्व न पार्यः २॥ व्यक्ति (प्रमक्ता

नवर्ष म चारणा यानि कत्रिष्ठा कृतृष्टि क्षपुष्का १२ :

এনমিলেণেজন মক্লভা প্রভাছে:। 'মুদ প্রেরণে' অন্ত নির্ভায়াং 'ন্দন্তনিষ্তু—' (পাণ্ডাহে তি) ইভাদিনা অক্তমিতি নিপাতঃ। আ ইতি অরণে। শ্বভবত্তা বরং। বেলুং ' মুদ্ধন্ ধনন্ ইলে, তে তব অপ্রতং ন কেনাগি ফুলং নালিতং মহাভাগামিতি শেবঃ। ইলুং নিশ্চয়ে। নিকঃ ন কেহিশি ঘুমহাভাগানাল ইতি লেবঃ। ন কেবলং ভবৈশ্বামানেং কিছুং দুর্বজ্ঞহমপীভাহে ন ছেতি। বতুরত্তা শালুগ্রে। ছাগান্ ছংগল্পা বিদানঃ বিদান দেবতা দেবো নাতি। আর্থে তল্ বিদেং লানন্ নিয়াদাল্লোভঃ। কিঞ্চ হে প্রবৃদ্ধ প্রক্ষেপ্র প্রকর্ষেণ বৃদ্ধান্তলোভঃ। কিঞ্চ হে প্রবৃদ্ধ প্রকর্ষেণ বৃদ্ধান্তলোভঃ। কিঞ্চ হে প্রবৃদ্ধ প্রাণপ্রকর্ষ, যানি কর্মাণি বৃত্তবণাদীনি ছং কুবৃহ্বি করোবি। যাতায়েন লোট্। ভানি কর্মাণি ভারমানঃ বর্জমানঃ লাভে। ভ্রুপুরিশ্চ দেবমস্থ্যের কলিছ ন নলতে ন ব্যাপ্রোভি। ন করোভীতার্বঃ। নলতির্ব্বানিকর্মা। ন করিল্বান চ করিল্বভি। উৎপৎস্থমান ইভি শেবঃ ইণ্ড ভিলোপো দীর্ঘণ্ড ছান্দ্রং। কালত্রেরে ছাতুলো নাস্তীভ্যর্বঃ। 'অতো যজেলন্তং । বন্ধ

वनी विकाने किल्या।

छिनान जूनराम (कार्कर यका ज्ञा क्या हेशाबा नुम्नः।

শতো অভানো নিরিণাভি শতানক যং বিশে মদভাুমাঃ। ৮০।

वृश्किनमृष्टे। भारक्षी विष्ट्रेन्। ज्यानम् ज्यानम् ज्यानम् उर्थानम् विष्ट्रे भारक्षी विष्ट्रेन्। ज्यानम् ज्यानम् विष्ट्रेन्। विष्ट्रेन्। ज्यानम् विष्ट्रेन्। ज्यानम्

अकामीकिछमी क छछ।।

हमा छ चा भूकारण गिरता वर्षक या भग।

भावकार्याः खाउरमा विशिष्टिखांदेखि द्विदिमत्रम्बस् । ७३ ।

त्यवा कि विष्टु है ज्ञानिकार वर्ष इव्हर्णा। भूक वह वस् वनः वक्ष म भूक वस्त है।

प्रश्चित्र है। इव्हर्ण कि भूक वस्त है। दिक्ष विभिन्न कि विष्टु कि

बाजीकको कथिक।

यक्रामः विश्व व्यार्क्षा मानः (व्यविशा व्यक्तिः।

ভিরণ্চিদর্থো রুল্মে প্রীরবি ভুভোৎলো **অভা**ভে রয়িঃ। ৮২।

বে আদি তা, যন্ত তবারং বিশ্বঃ লর্কোছলি আর্য্যা বর্ণশ্রেমবিহিতকর্মাঞ্জাতা লন্ দালঃ
দালবং লক্ষণা একণীরঃ বেবধিপাঃ নিনিরক্ষাঃ ক্লপণা বন্ত তবারিঃ লক্ষণ। নিধিঃ লেখধিরতি বাহ্মঃ। কিন্দ এবংবিধে ক্লপণে অর্থ্যে ধনস্থামিনি বৈশ্রে বা ভিরন্দিং। ভিরোহতার্দ্ধী
চিদপার্থে। অন্তর্ভূতো ভূমিগর্ত্তাণে নিক্ষিপ্রোহাপি তক্ত রম্নির্দ্ধনিচয়ঃ ভূভাং ইং মলোপল্ছান্দিনঃ। ভূভামের স্বল্থমবাজাতে ব্যক্তো ভবতি। কর্মকন্তরি বক্। ক্লপণত ধনং
ক্রমভিহিংলাক্ষা উপাদিকোহ্মপ্রভায়ঃ। ক্লভি হীনস্তীতি ক্লমঃ ভাষন্ ধনাপহর্ভূগাং
হিংলকে। আভিগ্যাদিভিরস্কারেশাস্থানোহাপ হিংলকে। প্রীর্মির পবিঃ ললামস্থাভীতি
পানীরমান্ত্র্য বো মহর্মীয়ঃ। পানীরং বাভি গজ্জি পানীর্বাঃ ভাসিন্ ধনরক্ষার্থমার্কে।
ভবাচ যাস্মঃ পানঃ লল্যো ভব্তি যান্ধ প্রাভি কাবং ভবংপনীরমান্ত্রণ ভবানিস্কঃ পনীরন্
হ্রাণ (বি০ ১২০১) ইতি। ধনিনাভিয়ত্বেন গুপ্তমণি ধনং ভত্ত আজ্জি ধর্মিন্তন্ত্রন

क्राभौष्ठिभी क्थिक।।

चात्र विद्यम्बिः विद्युष्ठः विद्युष्ठ हेव विश्वरिकः

वर्षाः (ना प्रका महिमा । गूर्ण महिमा गूर्ण महिमा वर्षा महिमा ।

७क-शेक्ट्रास्थिग-मञ्जर

(मवाकिनिवृद्देशिकारिक्षणा मरकावृद्देश । कामभाविकासंग हेलः नमूल हेव छिविषद् निवाद व्यनित्व विकाद विकाद

हजूनणिखनो किखना।

হিরণ্ডিক: ত্বিভার নগদে রক্ষা মাকিয়ে। অবশত্ল **ঈশভ**।৮৪।

क्राब्राका (०० ७२)। वर्षः भूरवाक्रग्गनः गमाश्रः ॥ (०० ८० म ।

नकानी किछा किछा।

জা নো যজ্ঞহ দিবিস্পূলং বায়ে। বাহি স্থানাভিঃ।

আন্তঃ পৰিত্ৰ উপরি জীণানোহয়**ে ভাতে**। জায়ামি ভো ৮৫ দ

ইতোহধারনমাপ্তান্তং অরোদশ খচঃ প্রভাবেতাশতভলশেতি ঐশ্রবারবারিনাবিত্রান্তানাই প্রহাণাং গ্রহণমন্ত্রাঃ পূর্বেবং । জনদন্তিবৃত্তী বার্দেশভা রুহতা আতা নব হাদশী চা দশমোন কান্দশীআরোদভাঃ লভোবৃহতাঃ। তে বাংলা, নোহশাকং যক্তমারাহি আগজ্ঞ। কীমুলং যক্তং । বিবিশপুরং ভালোকবালিনং ঋষিগাজমানবৈত্ত্তাক্ষিণাসম্পান্ত অর্গেহিপি প্রামাণমিভার্থঃ আগমা কিং ফলমত আহু অন্তরিত্তি। অন্তঃ পাত্রমধান্তঃ পবিত্রে দশাপবিত্রপোপরি শীবানঃ শ্রমাণঃ ভোতৃচমনেন বিবিচামানোহয়ং শুক্রঃ শুক্তঃ আভীবক্তরহিতঃ লোমোর রালাল্লা তে জুভাং দদর্শমানি নিয়ভঃ দ্বীয়ভাগ্রেন ময়া লংশ্বভঃ। 'ব্রু উপর্যেশ্ব

वक्रमिन-मर्विषा ।

वज्नी किन्नी क खिना।

वैखनायु च्चनः मुना च्चरवर रुनागरह।

यथा नः नर्स देख्वाताव्यभीयः मकाम प्रमा अगर। अगर। अगर।

छानमपृदेशस्त्रात्रतो। देश यर्छ नग्रभिस्त्राश् हनागर काट्यामः। उभाव नार्त्राः शिक्तिया हेछि कान्छ छं नग्र। कीपृत्री क्ष्रगरपृत्री क्ष्रहताः नग्रक् नम्भ छा। क्ष्रमा क्ष्रहताः त्याक गाव्यात्र्वे। छना हनागर यथा त्याक मानः नर्त हेर नर्त अस् क्ष्रमा क्ष्रहताः त्याक गाव्यात्री। छना हनागर यथा त्याक मानः नर्ति हेर नर्ति अस् क्ष्रमा क्ष्रहताः विद्या कार्याकः। कोपृत्राः कार्याकः। कार्याकः। कार्याकः। कार्याकः। कार्याकः। क्ष्रमारकः। क्ष्रमारकः।

मक्षांनी किन्द्रभी किन्द्रभा

बार्गाथ। न मर्खाः समस्य (नग्छाङ्गा

क्ष नृत्र भिद्धां रक्षणा १ कि छेप्र चाहरक स्थाना छ दस ॥ ५० ॥

क्षप्रकृष्टि रियद्धानस्त्रि । नृगः गिष्ठिष्टः (या मर्खा सञ्चा विद्धानस्तर्भ काहरक्ष्यः काळ्कर्ष्टः (नवसार्वः काळ्कर्षः (नवसार्वः काळ्कर्षः (नवसार्वः काळ्कर्षः (नवसार्वः काळ्कर्षः । काळ्डरेस् काळ्याकात् । श्रीतावसानित्यानः । क्ष्यामाळ्डस् क्षित्या कामास्त्र । काळ्डरेस् काळ्या (नवस्त्राकात् । श्रीतावस्त्रान्यः क्ष्याकात् । काळ्याकात् । काळ्या

अमेनिकिकने किल्म।

আগতমুণভূষতং মধ্যা পিৰভন্দিন।।

हुकः लक्षा युवना रच्छानच्छ मा रगा महिन्नानछन्। ৮৮।

ভিত্ত ইছি তিপরিশান্দি কৈন্ত্রী। 'লাছভেইনেন্ত্রণাক্ত পরিণানো ছাপর্জক পৃথিনীপুরুবয়োবাল্লক পঞ্চারিক্রমেন পরিপাকঃ 'ইভি ছু পঞ্চমান্নান্ত চাবাণঃ পুরুবহুলো ভবঙ্তি'
ইভি ক্রান্তেলি চপ্রনার লাভারেপঃ লোমােছি বৃত্তঃ লন্ অব্যুবলতীন নীনিপ্রাভারিক লেছু
অন্তর্গ্রের রগরণে শিক্তারে ইভা সন্ ভুগরিঃ গর্মজান্তঃ লামুপভ্নো ভূষা হিছি
আধানতে শীত্রং গছতি। 'স্থাভৌ ইভাক্ত শীত্রগতে ধাবাদেশঃ 'ভৃতীরুভানিভো হিছি
লোম আনাং ইভি ক্রান্তঃ। 'হরিঃ লোমাে বরিক্রপর্ণা বিষ্ণান্ত লামুপভ্না হিছি
প্রেলিক্তঃ লোম এন দিনি গভঃ গর্জক রগমন্ত্রাক্রমন্ত্রাক্রমান্তর্নার রিরেভি
ধন্নানা (নিক্রন ৪০১৭) ইভি যান্তঃ। ধাক্তাবং প্রান্তেশিক বরিরেভি
ধন্নানা রিরেণ্ড স্থানি প্রিলান্তেন ত্রীহির্মান্তর্নার ক্রান্তির ভবল। বছলদলংখাতিং। চভুর্বিণভূত্রামজীবনপর্বান্তিমিতাবঃ। প্রক্রম্পৃহং প্রকাণে বহুনামলি স্পৃহা
বিস্পা যান তং। বহুনোহলি যদ্ধান্তমিতাবঃ। প্রক্রম্পৃহং প্রকাণে ক্রান্তানি হিছিঃ
ক্রিক্রমং পর্জকর লাভার্বভানিতং কুর্মন্। 'লাণ্ডি-' (পাণ ৭.৪ ৬০) ইভান্তি
নিপাকঃ। বিত্ত লাভার্বভানিতং কুর্মন্। 'লাণ্ডি-' (পাণ ৭.৪ ৬০) ইভান্তি

मञ्जूषे देश्वे (त्वी। नीकार्ति (क्ष्णानः। यानस्था (त्वाखान् (ता वृद्धानन (क्ष्णान् वाष्ट्र) वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र व्याप्त वाष्ट्र व्याप्त व

द्यवसुष्टे। देवचामती। देवाव्धिः विचि द्वार्त्यास्य श्रृष्टेः ।नसः व्यक्तिशासमा द्विषः वस् व्यद्भाष्ट्य शोभारक 'भूष त्यरक' विकासः (मकः विकासः कोषु मार्थाः हे प्राप्ताः विद्यार महानार क्रिंग । त्रम् भवाम् क्ष्म (नावांधः (क्षांक्षा प्रकार्ग करें देमण वायटक क्याकामू अवामां स्व कातर निवर्तिक कि क्यो पुना वाया व्याप्त व्याप्त विका खब्दा बच्चा खेननकाटल मकी: कामजीकि वर । स्ट्रेंक्सर्गामिकिः मदेवस्तिन स्विश यद्यानंता चल्या प्रवा ह हताहितः अवनिभाककार्यन दिवना हमरनवंशीय विवाह 'छम के खासनाम' (निक्न० ७ ১৮) अञ्चर्तनामान के खार्यः । (००० ३२७) ।

विगयिष्ण अभी कि कि

हेलाबी जनावित्र भूकाशारमण्डीकाः ।

विषी बिरता बिक्सना यायम्ब्रतिक्षण्यरभवाक्रक्षनेर । ३० ॥

प्रदावाषुष्ठ। वेस्त्राश्चिर्वका। ध्वर्यत्वका। ८६ वेस्राश्चो, जनार नम्र नावत्रविकानि वेसम्बाह नष्डीकार नाष्युकाकाः सुक्षाकाः क्षकाकाः नुना क्षत्रमकारिनी मठी जा जनार जानक्षि मा ह खानार अवानार मिरता विषी निया गावरनन दक्षत्रांत्रको । यहा निरता विषी विषा काला वस्मानित्य। मधी विस्तिमा श्रानिगार याणिकासन वानवर। यहमूनका । खूनर व्यक्त क्रिको मठी हतर हता व्यन्ति । अफ्नानः। अन्य धनकी एषा अक्रियान खिरमदगरकानि नवा नवानि गयनगावनपृष्ठान मुद्धुकान् नि अक्रभीर नि हेदार क्रमः छ । आदि। वाद्यम खिरममूह्र छ। न्या । वाद् न्या । व्या । व्या । व्या । व्या । व्या । श्रूकवा । ८६ हेसावी, यूनद्याद्वदेनछ६ कर्य यह जागर मामवाक्षा गाम यह दिनिकारमा बाक् भूता धानमधावनी नडा का जगद नवडोडाः भागपुरकाट्या तामायमध्यादवादिक (मिक्शिक्वकवावाकिवानांकवाविधः मकानार त्यवाहः खावकार कर्णाकरः कर्णा खरेंबर ख्यममञ्चाटकात । जनः धानमकामा वाटार नक्ष वर निर्मीम माथ्या नाटा विक्रवस्थार विष्यो । नत्र हे। छ। नित्र हे। छ श्रायाक्याया। छ गत्र मुहार छ। ष्यकाथ शार मरखन खक्नार नीर वर्षाकारकर वार्त रलोकिका। वाहर अस्थरमा गम्भाकायार विकासिमा विमाधार्षि विवास खिया काला किल्लमा विद्वार्थ नानिधित्मन नानार किल्लिम को वर्ष का नानिक र्या अवर हत्यो ना जित्वरभाषिकक्रभार क्रमहि। वा अव अवनत्यार्मुनवहनंह। ध्नावादाविक मूक्वराष्ट्र विश्ववस्त्राम कार्यावः वार वावियद्वादवः व (००० - २००) ।

इक्न विकश किका।

रियारिया वि की। समस्य ममक्रिया विस्य माकल, मझाकस्था।

वि की। समस्य ममक्रिया विस्य माकल, मझाकस्था।

वि की। समस्य मिल्लिश । सम्बर्ध मिलिश । सम्बर्ध मिलिश । सम्बर्ध ।

वश्रृष्ठी देग्वरवि । वि च अरके विभारको अनिवाकिन प्रार्थी । कान्मरनो ववस्थी। रख अनिवा विरच रवनामः व्यव गर्धनामकारम रमाक्ष्य भाकः महिन विश्वरिवा व्यव गर्धनामकारम रमाकः महिन विश्वरिवा विषय रवनामकार विश्वरिवा विषय अने विश्वरिवा विश्व

भक्तवशिष्ठभी कि कि का I

व्यभाषमञ्ज्ञानिकारवरमा हाम्राज्यव ।

हिम्पास देख नवामि देवविदय दृश्क्षात्मा वक्रमध्य ॥ ३६॥

বুনেণভূতে যে মক্তর্য পনিশিষ্টেজনেশ্রো। স্বভাষা নহাজো ভানবো দীপ্তরো মন্ত ল বুছরারং মক্তর্য সংলো বক্ত ল সক্ষাপাং হে বৃহস্তানো, হে মক্ষাপণ হে উল্ল, লেবাঃ নুজুলারিক্যাঃ তে ভণ লব্যায় সৈত্রে বেনিয়ে কবং দ্ব নানোলোহসাক্ষিভাগার দুলুল ইভাভিপ্রারা আন্ধানং সংবতং কুভণভ ইভার্যঃ। ল ভণান্ অভিনতীঃ অভিনাপান্ সঞ্জালপ্রারা আন্ধানং সংবতং কুভণভ ইভার্যঃ। ল ভণান্ অভিনতীঃ অভিনাপান্ সঞ্জালপ্রারা আপান্যৰ অপান্যর অপান্যরিভিন্ত । ব্যান্তর্গতিক্ষা (নিক্লা ভান) ইভিন্তি । অব পান্যর অপান্যর অপান্যর বিক্লা ব্যালা অভনং লক্ষ্যা ব্যালা অভ্যানা ভারা । আন অভনং লক্ষ্যা আন্ধান্ত ভারা আন্ধান ক্ষালা লাভি বেবাং তে অভন্তঃ নিক্ষা অভ্যানা হলভী ভারাভাবিকা। ইলাঃ ঐপর্বানান্ ইলাভীভীলাং। যো ক্ষাভাতিলাপাল্যাক্ষা হলপী ভোক্ষী বৃদ্ধভাবিকা গ্রালায়ে বৃদ্ধভাতিলানা । বি ক্ষালাভাবিকা বৃদ্ধভাবিকা বৃদ্ধভাবিকা বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী বৃদ্ধভাবিকা বিজ্ঞানী ব

वश्वविषयो क छिका।

ख व देखात वृष्ट्य अल्लाका खमार्क्छ। वृज्य वृश्वि वृज्यम् महत्र्यम् वृश्वि वृज्यम् । ३७ वृ

(च मझ छः, (ना मचाकर वामिस्य वेस्तात्त वृत्तर खन्न (नवर नामझ नश्चात्तर खाई छ द्वाक्षात्र ह । कोष्ट्रनाराखात्र । तृत्तर व्याप्त वृत्तर व्याप्त वृत्तर व्याप्त वृत्तर व्याप्त वृत्तर व्याप्त वृत्तर वृत्

मञ्जनविक्षियो कि विकार विकार विकार विकार। विकार विकार विकार विकार विकार विकार। विकार विकार विकार विकार विकार विकार। विकार विकार

प्रश्वाच विष्ण क्षेत्र विष्ण विष्ण

विभागान्य गोक्षामार वाक्षण (माम्रण काम्रण काम्रण वाक्षण विभाग । ०० ह क्षेत्रमहोषत्र इष्ट (व्यक्षोरण व्यवस्य क्षेत्रमहोषत्र विषय विभाग व्यवस्य विभाग विभाग ।

यङ्दर्वन-मश्रिण।

[अक्रयजूदर्यम – राजमदनशिमश्रिजा ।]

চতক্তিংশোহধ্যায়ঃ।

क्षायमा क जिया।

विकाशास्त्रा प्रमूरिमांख देवनर सङ्ग्र अक्षण खरेवदेविक।

ष्रुत्रभवर द्वाडिकार द्वाडिकार द्वाडिकार कार्यक करका मनः विकारकारक ॥ > ॥

व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व

लक्ष निवासित वक्षाः ।

बिहोगा क छन।।

स्वम कर्णाणभागा मनीविद्या वाक द्वरिष्ठ विद्या है। । विभिन्न कर्णाणभागा मनीविद्या वाक द्वरिष्ठ विद्या । । विभिन्न विभाग कर्णाण कर्णाण मनः विव्यक्ष स्वास्त्र ।

মনীঘণঃ মেধাবিদঃ যজে যেন মননা গড়া কর্মানি ক্রব ও কুর্বান্ত 'ফ করণে' স্বাধিনা সমগ্রে স্থান্তিং নিনা কর্মান প্রত্যা কর্মান কর্মা

श्रीय किल्ना।

বং প্রজ্ঞানমূত চোডো ধৃতিত যদ্জোতিরভারমূতং প্রাক্তা

বিশাস বাভে কিঞা ল কর্ম ক্রিয়ভে তব্মে মনঃ শিবশংক্তাপভা । ও ।

> 84) देखि वांद्वांद्वारक . व्यामुख्ययववर्ष वा बुद्धलवार । यवाद्धनगः वट्ड व्यादार्शियाः क्षिक्य किवान कर्ष व क्षित्र खटेना । वर्ष कर्ष व व्यानिनार यगः गृत्तर व्यवध्यनिक्षणाचार-ं विमा कर्षाकायाविकार्यः। "अकाग्राविकश्रक्ष-" (भा. २०२०) हेज्याविमा वसाविक वहड-द्वार्य नक्षी। अध्यायम हेकि वााचाकः । (७३व--७४)।

· हरूबी किल्या।

कृत्र कृत्वर कविष्ठरभविष्ठिकेष्ठभवृत्कन वर्षक् । दिन क्लाबारक नदीरहाक। काल क्षत विकादसम्बद्ध ह

(यम समना हेक्श नर्कार नित्रभृदीखर नित्रखः नर्काखा काखर । देशर निकृतर । कृषकान-मचित्र वर्षा क्ष्मार क्ष्मोक क्ष्मार। क्षा करका क्षा श्रामा वर्षा 'मुहेः नवा' (ला॰ ७।० ३८) इंकि मक्शकामः '(को नद' (ला॰ ७ श) २२१) हेक्युरक्षक जियानपद्माच्या अनु धनः अन्या देवार्थः त्याजायीनि कृ श्राकाकारथय गृहस्य। कीपूर्यक (यम। व्यवुष्डम वाचर्डम। कृष्टि वर्ष। छर (आवाशीन मर्क्ड वमक्ष्यवस्थानार्थः। (यम ह वनना चट्डार्थि(डेमांकः डाम्र्ट विकाशिट । "ड्याट व्यक्ति" (ना० ७ 8 8 8) हेडाकातः । कोषुत्ना वका। नक्षरशका नक्ष रहा कारता रवनामान्याकारता रहाकरेनवावस्त्रनावरता वक

वाव वक्ष्य वि याचन्कांकिका उपमाकानियायाः।

.... पिक्क विकास विकास अकामार क्षा समः विकार महास

्र विष्यु समित व्यक्त अधिकार । पश्चिम नाम नामानि अधिकानि । पश्चिम प्रकृति व्यक्तिकारिक । वसका वार्ष्या एक रक्तवामी व्यक्तिमान वस्त्राचाल व्यक्तिकार व्यवस्थार वि त्यात्रा वयशे वेषि हारमादका वयन अव. वाट्स (वासावववाकः अविवादिका । अव विद्वास्त । 'क्षेत्राटक) आसाः हर्। वदा लावाः सदक्ष्मगदक्षे वदम स्विधासम्ब जानर मन्ति। क्रिक व्यक्षानार नक्तर क्रिकर कानर नक्तेनवादीनिषष्ठि कानर विचन समिन करु

955

स्थात्यः विक्रिशः चष्ट्रविष्टः नाष्ट्र हेव नक्षः क्षात्रः व्यविक्षः । वनःवाद्या अव क्षात्यादनिक्षित्रं नादेनवरक्षात्र क्षामाचानः । स्थान्य वयः विवनक्षाः वास्त्रानावयः । १ ।

वर्षी काक्षा।

क्रियां वित्रवानिय यंत्रक्षात्मनीय विक्रिक्षा क्रिया है ।

विश्विष्ठि विश्विष्ठ व्यक्ति विश्विष्ठ विश्वि

ये९ यत्मा मण्डाम्मार्गाम्भारक जावार्यमिष्ठश्वा मध्य । मम्मारक्षिण अन क्षाणिमः क्षाण्डा । मण्डाधारण क्षाणिमः क्षाण्डा । मण्डाधारण क्षाणिमः क्षाणिमः क्षाण्डा । मण्डाधारण क्षाणिमः व्याणिमः क्षाणिमः मामिर्विश्वा वथा कन्मा ज्याम तम्माद्रकः । विशेषाः पृथावा । विशेषाः व्याणिकि विशेषाः क्षाणिकि विशेषाः विशेषाः । विशेषाः । विशेषाः । विशेषाः विशेषाः । विशेषाः विशेषाः । विशेषाः । विशेषाः । विशेषाः विशेषाः । विशेषाः

म्भो क छन।।

लिकूर क् त्कावर मत्ना धर्मावर कवियोग ।

पश्च खिर्छ। (सांक्या मुख्यः विभक्षमक्त्र ॥ १॥

किन् क्रम्बिकः। कर निकृत्यार त्यावर त्योव। क्रिया वारा व्याप्ति क्रिया व्याप्ति व्यापति व्

विनक्षर विश्वधानि नक्षानि वश्र छर। ए প্রভারে টিলোন।। व्यक्षेत्रर 'व्यन्तर क्षण्याख-र्याद्मिर्शन' (ना॰ ७ ६ १४) वेकाष्ठकावश्च । 'वावीय अप्तः' (ना॰ ১ ৪/৮২) वेषि रवक्षणमन्नश्च वावावर ॥ (७८ व १ व) ॥

वाहेकी क खका।

व्यविष्णुभरक वर भक्षारेण व्यर ह गक्ष्म ।

क्षा वकाम (मा विक अन जामूर्णीय अपित्र । ।

हित्रसिष्ट्रिके प्रतिविश्वमित्रिक्षि । हैर मिलार्डिक्षिक्ष । दि व्यक्ष्यर स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य

नन्भी क शिका।

ৰ জু নোহভাত্যভিগতে দেশের মভাগান্।

चाराण्ड वनानास्ता खनसर साखास मग्रह । अ श

अक्ष्मिक्त अप त्मार्था मार पकर (मार्थू मिक्सियू अक्ष्मक्षकार। अधिक पकर (मार्थ्यू अक्ष्मक्षकार। किस्म मार्था मार्था । कर्मार्था । कर्मार्थि प्रमाणिका । स्वार पद्मक्री विद्या । स्वार पद्मक्र पद्मक्री विद्य । स्वार पद्मक्र विद्य । स्वार पद्मक्री विद्य । स्वार



मणमी किया।

निमीनानि शृथूरे एक या स्मामायनि जना।

ख्यच चनामाख्य श्राचार त्यनि विविद्धि नः ॥ ১ - ॥

अकामनी क छन।।

भक्ष मण्डः नत्रच छोमिनि इच्छि नत्या छम्। मत्रण छो छू भक्षा भा त्वर्थक्ष छन्दमस्ति । ১১ ह

नवच हो मनो दिन महा। याः स्मार हा। विक्र महा स्वाप हो मता का का मता है। कि स्वाप हो स्वाप है। कि स्वाप हो स्वाप

मामनी कलिका।

चिमरक्ष क्षप्रमा व्यंक्षता व्यक्तिर्मा क्षमामञ्चनः विषः नवा।

ख व क कार्या निवानाभरमार्थावस मङ्ग्रहा ख क्षेत्र । उर ।

हिष्ण नार्श्ववाः (च कर्गाका) जात्म विदेशकार एको । एक जात्म, का विभागार क्षेत्रमः नणी जात्म क्ष्मिताः क्ष्मिताः क्ष्मिताः क्ष्मिताः क्ष्मिताः क्ष्मिताः विदेशः क्ष्मितः। वद्या जान्य जात्मा विद्या विद

i le die Prinze

षर दवा चंदध खन दवन नाक्ष्यियंद्वारमा मूक्क खन्छ यन्।।

खांडा (डाकड डबरब नगांवडियरमध्य सक्तांवडिय संदर्ध ५० व

मुक्ति। एवं व्यक्ष । एवं व्यक्ष । एवं व्यक्ष । एवं प्रवास । एवं व्यक्ष व्यक्ष प्रवास । विव्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष । विव्यक्ष व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक्

हिंद्यामाश्राधनकता हिन्दियामाणः कारीका त्रवनः जनाव। सम्बद्धना सम्बद्ध भाव केल्डासम्भूष्या महत्मकविद्ध । ১৪ ।

यह वेखानाः शृथिनाः भूताविश्वस्त्र्व श्रकात्म कर्षाम जकमिष्ठे बाखः कि खाः ।
जक्षमञ्चनः 'स्रव वर्ष' द्राविख स्रवः अस्तर्यार्थिः नकः कृर्णा खार्नाखार्या पत्र न खवा।
कृष्ठिखारत्रं अस्तर्यः स्रवः श्रीकः शोकः नम्मूखानावावनगात्रनश्च अवादीमः इतः।
विश्वरिक्षाः (भा- ७ स्१००१) वेखि शोर्षः। विश्वपाम अतिनमः जामन्। विश्वविख्याख द्रिक्षाः विश्वर्या अस्ति। विश्वर्या विश्वय्या विश्वर्या विश्वय्या विश्वय्य विश्वय्या विश्वय्या विश्वय्या विश्वय्या विश्वय्या विश्वय्यय विश

श्रीकार्थी कि कि । विद्यात्राचा भवि वृष्ट गांका श्रीविष्टा व्याव्या व्याक्टरवरण मिनीमक् स्त्र क्रियात्र ट्याक्ट्य ४ ३ ८ ॥

द्वाहरा वाक्यकाम (क व्यक्ष, क्ष्णावाः श्विगाः वात्म (वनव्रवमार्थः श्विगाः व्यक्षित्र वाक्यकार्थः श्विगाः विवाह विवाहः वि

(शास्त्रभी किक।

श्रीकार्क व्यवनानां व्यवनाक्ष्म विश्वन व्यवस्था । विश्वन विश्वन

एक बिलाबिहेकः। नम्मिलोम हिलार्बमान पर (कावर विकाशिकः कामग्रह कामीयः। क्षिक्ष ७१ (खायर । भूवर वजा बजूर । जर्कर महार छ जाकी म फेक्का सथाम वाजुन।-व्यायकार्वचावर्क्ष' अक्रव्हा बनार्थः । विकाय व्याज्येन हेन । देख्याचा देखार्था व्याद्धा महान्ह प्रिक्टिय खबर । किन्नुडारब्रह्मात्र । जनमानाष्ट्र मरना बन्नभाष्ट्रम हेन्द्र जि जनशिक जनको ि व्यवनामः कट्न नमर्गाकम्पनानामः। 'कुल काक्षमः माह्' (भा० के) हेकि स्मान क्वसा-म्लामह मन 'वहनर हमान' (भा० २।३ २५) विक खन मुक् 'कम्प मान्यान (ना॰ काडी >> 4) विक क्ष माग्रहार्नाक्षित्रकार 'काक विकारा' (भा० ७ ७'८०) विक कार्का त्नामश व्यवनाम देखि निगक्ति। भूमः कोष्ट्रनाव। निर्वादम निमा प्रकार व्यवक्रिक ज्ञाञ्चानमञ्ज्ञामार द्वाष्ट्रका विक शिक्षवाः । त्रीः वृद्धा भगवाष्ट्रवाद्धर्भस्याष्ट्रकृतिः यवा चार्य निड् त्रीं करत्र नर दश्या कविक देखि निर्मीनाः करेच । विकाननरक्व नवामार्थी निर्मिनः नमः। भूनः किकु शत्र। स्रवृक्तिकिः (नाक्रमाकिः स्विकिः स्वर्क रहोत्रीति सन् **७८ेम । यबभागानिक (नवः । ७६:कर 'स्थम अमर्शन(या (वनः पविकं यक्षार' (७।७१) विका** भूगः कोकुनाम । अ'ग्रामाम मग्रामास त्यसम्राम । सम्राप्त हान्यमी सिस्हे । सम्रा अह आहे विकायासार न वेनाविरका मक् कूषर सम्बर्ग समाः सकिः सम्बनि समानः नर्वात यहः खिर्यानात्र। भूमः कीषुनात्र। यदः महत्रभात्र। सृनक्ष ८६ भटत्र छात्रदेग ७१:। श्रमः कोवृनाम । विकासम (जो नाम नमानिक स्वास्त्रम । (०८० - >७०)।

मञ्चानो कि का।

बारवा वर्ष विष् वर्षा क्रव्यनाक क्रक् वर्षा विष्या ।

रक्षा वर पूर्ण विषय है विषय वर्षा वर्

यद् वहर छ ज्वनामात्र वनमिष्ठ जनमानार प्रक्षात्र मिष्ठ महर वहा वृत्तर क्षण प्रक्षक क्षण प्रकार क्षण प्रकार क्षण प्रकार का वृत्ति छ। वृत्ति का वृत्

नाश हार्क्डः स्व १ स्व १ मा १ १ कि त्रामा १ कि ताश है। स्व १ कि ताश है। स्व १ स्व १ स्व १ स्व १ स्व १ स्व १ स्व

अमेविनी क लका।

हेक्क् च। त्नामानः नवायः च्चक्कि त्नाभर वस्ति अग्नार्ण्ना

बदकानानरणी किछा।

न एक पूरत नत्रमा हिज्ञकाल्छ। ज खनाव् क्तरना क्रिकाक्।

ছিয়াম ব্ৰফে শ্বনা ক্ৰভেমা যুক্তন গ্ৰাণাৰঃ প্ৰিধানে অথে। ১৯ ৪

(च हतियः, हती व्यापे निर्वाण यक्त न वित्रान वक्त नर्मायः 'मकूष्ताः -' (भाक्त क्षाः) है विक्राणः । एक वित्रः, वित्राय वृत्राने व्यापः (मरक्त क्षाः है वा निर्माण विवास क्षाः क्षां । एक विवास व

विश्नी क'का।

व्यव हर सूर्य गुडमान भाषाच् प्रवीमकार द्वन ४ (भाषाम्।

खरतसूषाण चार्का ७० चार्यात वस्तर कामक्रमाक्म (माम ॥ २०॥

চতন্তঃ লোমদেশতান্তিই ভঃ। বে লোগ, ভাং কর্ত্র্প্দর্থণ বর্ত্তধান্মন্ত বরং মদেক
ভাষা ভাষা। কিন্তুবং ভাং। বৃংক্ষ যুদ্ধের অধান্মলনমন্তিত্বং। পুনঃ কীলুলং।
পুতনাত্র লেনান্ত পপ্রিং পালারভারং। অর্থাং বার্দ্ধাং লনান্তি লক্তরতে ল অর্থা। ভং।
কলাং অলো অলানি লনোভীভাজাঃ ভং। বৃজনত বলত গোপাং রক্ষকং। ভরেরুজাং
লংগ্রামের কেতারং। প্রিক্ষিণিং অনিবালং। গুল্লনত লোভনং প্রাঃ কীতিবিভি ল প্রান্ধার
ভং। অবাল্য লক্তভেংলী লালঃ ন পাল্য জলাল্তং। পত্যে ভ্রুত্বং (পা০ চা২-০১-)
বহুং (পা০ ৯-২-৪০) টু ভুং (পা০ ৮-৪।৪-২) 'লো চে লোপান্ত' (পা০, চাও)২) 'জলোপে
পুর্বান্ত বীর্ঘাংশঃ' (পা০ ৬ ০)১১১) শাল্পনতাং 'লাহ্বহোবোল্বর্গত' (পা০ ৬-০১১২)
ইভ্রান্তাপ্রিল্য বন্ধং ছাল্লনং। পপ্রিং 'পু পালনপুরশ্রোঃ' 'আলুগ্রব্নন-' (পা০ ২ ১৭১)
বিভ কিঃ ভিন্তালি। স্বাং স্থাপ্রাংল্লনাবেবিক্ট 'লিড্রনারক্তনালিকভার্থ (পা০ ৬-০৪১)।
ক্রেক্সাং। গোলারটীতি লোলাঃ ভিল, অত্যে লোপাঃ বলোপাঃ। ভ্রেক্সাং ভবেন্দ্র
লংগ্রামের জন্মতি অন্ননিভি ভরেরুজাঃ 'বলহন্তাৎসপ্রসাঃ' (পা০ ৬ ০১০) ইভি অনুকৃ।
ভ্রান্তেরীশাধিনো ভারাভার্য। মধের 'মদী হর্ষে' লিঙ্বান্তারেন শ্রণ্ড। (ও৪ -২০ক)।

जकिका किला

। हिन्दाः (नक्ष्रच् त्यारमा व्यक्तस्थमास्त्रच्यारमास्त्रक्ष्यास्त्रक्ष्यास्त्रक्ष्यास्त्रक्ष्यास्त्रक्ष्यास्त्रक

मामकर विषयार मरक्ष्मर निष्ध्रान्य त्या वसामवदेखा २०।

त्या वस्त्राहित्य त्यायाम क्यांवर प्रकाशि विषः छत्य त्यात्या त्यस्य प्रवाशि व्यक्ति विद्या विषय प्रवाशि विद्या विषय विद्या विषय विद्या विद्या

स्वायर 'वाय वाट्य' 'बह्ना ह्यानि' (भा० २ 8 १७) हेकि ये में है विष् 'हेडान्ड (जां नह लक्टेच्चल्डाब्यू' (ना॰ अताक्ष्य) देखि खिन देखानः। '(माडिकिडाडी' (ना॰ ७,६ कड) हिलाक्षाध्याः । (७६ व — २५ व) ॥

वाविश्नी किल्ना।

चित्रा ७वधीः भाग निषायमः ना ज्ञानम् अर

खवाखकरश्वाक्रकात्रकर पर (वाशंक्षा वि कत्मा ववर्ष । २२ ॥

हि त्यान, श्रीव्याः विश्वाः वश्वाः अवगीः ज्ञां कामान श्रीः त्यानः ज्ञान्य अभिक्षनामिन । वयुक्त विक्रीर्भव विक्रवास्त्रक विकासिक माननि । वर छ द्वासिक व दिवा कर्मा क्रिका क्र विवयं विश्वत्यावि । ज्ञांकिकाान्यना वर्त्यर क्रवार्थनम्भगीकि वर्त्वाका क्षिकार्यः । 'वक्रवाकः ख्या अधिवर्षि विश्वास्य (१० १०१७६) देखि विश्वासः । (१०० - २००) ।

खरत्राविश्ली किंक्ना।

धमना (एव दर्गाम जारमा कार्य) नवनावप्रकियुक्त t चाक्रमधीनिद्य वीदारचाकरप्रकाः क्रीहिक्या भनिरही ॥ ३० ॥

CE (स्न. (माथ. Ce महमादम् रमनम्, (प्रत्यम यनमा (प्रमचित्रमा मगमा नह सारम्) सम् कान्तर (माक्षकामकियुना । यूनाकिनीकिन्दी अक्षकि। निक्रमान (मक्षेणार्थः । अपर शाम श्रेष्णः पार कंन्डिर या नाडनर या मार का छामायू मा अधिनश्राष्ट्र । अध्माविश क्षाक्षित्वार्थः। क्र अष्टाम वृक्षाम देखि (हर य अष् नीथान मिनिय योगमर्थन क्षेत्रा कनिम क्विनीभविष्याः' (भा० २१०।६२) वेकि कर्षां विक किक भावती (भाः वर्षक हरहे। हेक्काश्वार चर्निनवाश्वार विमय्नकृष्णायार ममामूक्ष्यकाः आहिक्तिरम केष्यामान शाक्षावर हिक्तिनार अस्वामा व्यद्वाताम्क नरमची क्रून्वाना वना चर्नः वाचामक्रना क्रूनिक वामार्वः। (नर्वम क्ष्यामामिक क्ष्य का का का निष्य का निष यमयश्वीकि व्हनासन व्यक्त वस्तर क्रमारचः भनक (माहेक्षाभन हेला नक्ता कि विवन व्यक्तिकिकिश वन (वा. वाराह) क्षिमानि हें । वा. वाराह) हिंदि \$ { \$65mm\$ 90 } 6

इंड्र'न्बर्नी किया।

व्यक्षे वाबार २ क्रम्भ शृबिगाची वस स्वाचना महा निस्त्व।

विज्ञानात्त्वः निस्त्वः स्वाचानित २० ह

एकवा नानिकाः विक्रीमां कराने क्रिये (क्रांत्रकार विमान्त निर्माण क्रिये (क्रांत्रकार क्रियं क्रियं विक्रियं (क्रांत्रकार क्रांत्रकार क्रियं क्रियं विक्रियं (क्रांत्रकार क्रियं क्रियं

लक्षित्भी किका।

व्यिनाभानिः निवका निवर्षिनस्य ज्ञानान्विनी ज्ञानार्थ।

ज्ञाभावार वावटक ८१७ व्यामिक क्रायम स्वना छ।मू:वाकि । २८ ।

जिया श्री श्री जिया विश्व क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित

विष्याः निमाननिक्षाः।

क्ष्मिक किया।

हित्रगाहरका अञ्जाः कृतीयः समुष्ठीकः चनार शादम्काद्।

ख भरमगन् जन्मा वाष्ट्रपामा वाष्ट्रपामा खाद्या । वाष्ट्रपामा वाष्ट्रपामा वाष्ट्रपामा वाष्ट्रपामा वाष्ट्रपामा व

ं त्या (कर्ता प्रतिः तक्षां तक्षणा तक्षणान याज्यानात व्यवक्ताःक व्यवक्ताः व्यवक्ताः क्षणान्य व्यवक्ताः क्षणां विष्णां विष्णां

मश्रविश्ली कालका।

। (म (ख भद्धाः निचः शृक्तारमान्यमम श्रद्भका व्यक्कतिरकः।

(फिक्सिन जा भिनिष्ट कर्मको कका ह त्या आंध ह खिन एमन । २१॥

एक मिनिष्ठः, ८७ ८मव, अक्षाः अक्षाः अक्षाः मार्गाः व्यक्षितिक चक्रकाः मार्क्षकाः स्था नर्जस्य । क्षा व्यक्षि । भूमामः भूरम्य कारम् व्यक्ष गरम् । अर्थन्तः माखि द्वर्गाः व्यक्ष व्यक्षिः । स्था व्यक्ष व्यक्ष

i हर-भक्रक्र मेन-पन

विश्वी किला

केश निवचनविद्याचा यह वर्ष वक्ष्यम्। व्यनिक्षित्राचिक्षविक्षे ॥ १৮ ह

व्यक्ति ख्रिक्षः अका नामको त्य व्यक्ति । त्य व्यक्ति व्यक्ति । त्य व्यक्ति व्यक्ति । त्यामिक व्यक्ति । व्

। किलीक मिश्रक्ति किश्रक

व्यवस्थीविता वाहमत्य कृष्टर त्या बळा इंदवा धनीवाव !

व्यम्राटकारुयरम निस्त्रत्व यार स्टब छ त्या क्षत्रकर याक्यांत्की ६ ६० ६

बिश्नो किश्वना

उद्या बिट्या चम्न्ट्ला मामक्खामिनिकिश मिर्द्धा पृथिमी डिक द्यारिश ७० ह

दंश विषया विषयो, कृष्णिः विषये विषय

वश्विःणी किका।

हेबर्जकाकवाक्ष्याकार वाक्षिमी शक्ष । स्वम स्काकर छ कावर छ वावर्ष । ७०॥



अष्टिक्ष मि कि

। १७म विश् क्षा क विकार , क्या वर्ष का का क्षिया ग्राम्य का का का विकार ।

का क्षत्र श्रम् अक्ष्म विष का का त्याच्यू क क्रम्म **ए**रकः । ०० ।

खना के क्रिया । स्वाहः वर्षा मे जावहनः। यथः स्वाहः श्रृतः प्रमः स्वाहः वर्षाः वर्षाः

भक्षा भी किश्वा।

ला विक्तिवर चनकूत्राच्या स्थाप नाम भूजमानि एक देशा विवर्धाः।

व्याद्धिकः वक्षम्बक्षिकः व्याद्धिकः वक्षः वक्षेत्राहः । वदः।

लक जनत्त्वाक्षित्रेष्ठः। यद्रः छः जनविकाः स्वयं वास्त्रामः। किक्वाः
स्वाक्षित्रः व्यक्षित्रकोण व्यक्षित्रं छः व्यक्षित्रकेष्ठः। देवस्य वास्त्रामः। किक्वाः
स्वाक्षित्रः व्यक्षित्रकेष्ठः। छः करः। (स विषक्षं कन्नत्वा स्वतिका। यकः व्यक्षित्रः
स्विक्ष्यार्थार्थः। यथा वक्षित्रः विषक्षे कन्नत्वा स्वतिका। यकः व्यक्षित्रः
स्वाक्षित्रः व्यक्षित्रः। यथा वक्षित्रः विषक्षः। व्यक्षः वक्ष्यः वृक्षित्रः विषक्षः
स्विक्षः वक्षः। यथा वक्षः ववादः विषक्षः। विर स्वति विषक्षः वक्षः वृक्षित्रः विषक्षः वि

विष्ट्र विष-गर्शिया। [०१ व, ००-०० को

७१ शदनकर्षन नकासारवा चरमगर विश्वयूपना वषकः।

७१ छ त्या चयत (भाकित्रदेशक छ वृश्वित्रवृश्यः माय ७७ ६

मखिल्भी किका।

हिश्चमानीर क्षत्रवाह काट्यांक व्यापिक केस घटना क्रम् ।

हिट्यांष्ट्या मचनन्त्र्याच्य यत्र रक्तानाणः स्थरको छात्र ॥ ७१ ॥

८६ मयनम् वनवन् त्रद्युः छक्ष व्यापकः वम्रविषामीः व्यवस्था कामवरका वा काम करवकः छ। विका व्यापकः विका व्यापकः व

वक्षिणी किका

कर या जन नम्र विकारनेजि न त्या जन श्रवका जत्यवा जन



. i**3**

14

८६ (पनाः, ७म क्रने छमनान्। पनवामक क्रियोस्याकृष्टिकिविविकि कान्य। देखक मर्भ धन चनः छ थिषिः या व्यावनीति व्यक्षास्त्रवित इंडीनद्वाता (ए कन, न स्थित स्मार्यापर पर्याप श्रक्षा भूरवार्धा क्षीं भूरका वज्रात्रो प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता न्य कार्तापि नाव्यकार्यः । (०० ०० - ०० क) ।

बाकान किश्वीष्ट्रिका

स्वारप्रायरमाक्यमण व्यविद्यारयय क्षरप्र

त्या उपक्रियाचा

क्षियः आखाकावाणिकाशास्त्रा (वनाः व्यवस्तात्र मझनक मझन्द्र अव्योकविष्य । व्यविष्य विकास क्या देव। क्या व्यवः क्षा व्यवः क्षा व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः अभ्याविकार दमार् माक्यका हो समाध्य व्यावस्त व्यावसम्ब । किन्नु वर कार । वन्नु विवृद वन्नु धमर निम्म छोडि न युन्ति 'हेकनव' (ना० ७ > > : ८.) हेडि मः। वदा बाब्दिमार् व्यवस्था द्वन्यद्का वा क्या सप्भावविक कष्ट ह (०४ ज - ०२ क) ह

ह्याबिश्नी किथना।

व्यवस्थितिय कोश्च दियात्मा योजनकोः नव्यवस्थ

इंडर इहामा विचंवः द्वानीता यूवर गाउ पश्चिकिः

क्षरबारबन्डम जिड्डेन् । क्रेनाः नवः नवाकालः द्रशस्याद्यक्षः विवानम् व्यव्यावनम् नर लाल् (माहम्स । 'केन्द्रो विवादन'। किन्द्रुका केनना। लक्षावशेट लवनकाः (मामक्रोह म्बाद्ध अभिकाः वदार्वकादेवसानादिकाः । नामः नी वाद्यतः । अन् नद्वाकः आवश् «अक्ट्रम्मवासः दिस् क्रियाः, यूष्ट्र चाक्रिकः क्रियादेवः वक्षा त्यास्याम् वास वालक्ष ॥ ॥ ॥

अक्षातिरणी किका।

वहर न क्रिक्य मनावय। त्वावावक वेव जनि

्ष (भोरकारे भावकी विषेटको। (व भूगम्, क्षत्र क्षत्र क्षत्र विषयामा वहर क्षावन क्वानि व तिरक्षम व विवाद्यन । किक देव कर्यनि ८० छन (काढांसः कविन वासः विनु क्ष्रंमा । व्राष्ट्रा मिन । (काल ०२७) ।

बिडबाबिःषी किका।

व्यक्तवः व्यवस्थि वहनां कारमव सरका क्रान्यक्ष व त्या साम्बद्धक्रवण्डवाता वित्रश् वित्रभ् नीयनान्ति का श्रृवा । ४२।

य। भूका व्यक्त (प्रनवकाश्यक्ते व्यक्तिनाश्चिष्ठ । किन्द्र का का वित्र का मार्थ है कि कामर (क्रम वाक्षिर्यम यहना। यहना (यहनारकाम कृष्ठः व्यक्षियुपीक्षकः। किन्तु व्यक्तः। भवन्नायः भार्तक थार्यक मर्व्यवार वार्वावार अविविध्विष्ठिविष्ठ वार्वितर । नः श्रुवा त्यार्वकार क्रम्पः कहर क्रिक्कि वर्षमानार श्रीवाद्याविद्यार (नाममानक्षत्राणि जादमामि सावर क्षाक् । किन्नगढायः। कि खा था। कक्ष था। हक्षाओ: हक्षमाक्षापक मध्य वामार खाः। मान्य क्रांड वाक्षारमा क्रांड क्ष्मिक जुमा विश्व विश्व कर्षानि नक्षांन क्षतीयनां छ व्यक्तिन नावश्रक्त । अवन्यवः विश्व विश्वविक्ति । 'बिखारी'न(मा.' (পा॰ ৮ ৯ ৪) देखि विषः । नहनम निकरक्षवीदवन्ध । जागहे गाथिक विष् व्ययप्तर पठिष्ठः। कीमगाकि 'नाथ नश्मिरको चगः म्रान्यमः विषर। 'दमार्ट देखारिके क्ष्यानीमार मीर्दार्कानमा छन्याद्वन्य क्या । (७६ व - ६२ क) ।

। किला किली किला।

कींव जर्म विक्रम्पन विक्रूः मी भी जर्माकार । व्यव्या वर्षावि वासम्ब । ७० ।

टैनक्थ को बारको बरवाब हिरा सका कार । त्या विकू कका जीन नवा नवाकि विक्रक क विकासनाय व्यविष्यान्। विकासमि वक्षिय सास्त्रान्। विस्ट्रा िकः। ८भागाः स्वर्धाः क्षक्रमा अक्षाबार अधिकार। किर मूर्कन्। अका अभावि श्रवादि श्रवादि श्रवादि क्षीनि शहाब्। वर्षशहाबार । (०८ मा- ७००) ह

इक्टिक्शिक किना ।

विकारमा निषक्ष वात्राध मा निषक्ष । विकास नम् । अव ।

क्या विरक्षाः वक्षण वर्णवयर लिए खर्चनक्यर कविद्यानः विद्याः वाक्षणाः विवारकः निर्हा (माना । मिश्रेयकि वीनविष । कैनामट हेकार्यः । किश्रुवाः विश्वकाः । विश्वकाः निम् डः लक्षाः मरमास्मास्वादवा एषकाः विकाशाः । जाम्बारमः जामस्विक्षेणाः ज्ञासकाः । ज्ञास् क्षंत्र नमूक्तप्रकातिम हेडार्थः । (७८० ४८क) ॥

शक्षातिः ने किया।

व्यवको क्रामाविधिक्षाकी पृथी ध्रम्भ श्वाशार्थिकी मञ्ज्ञ वर्षना निक्षित्क व्यवस्त कृत्रिरम्बना । १८ ।

व्यविष्ठी क्षानाश्विनीत्वन छ।। क्षानाश्विनी क्षानाश्वित्नारे नक्कन क्षानिकाक वर्ष्यना वास्त्रवन वात्रवयका। विक्रिक्टक खेलाछ। इन्जानिक ए नत्रवार्थः। वक्रद्वय - ववका। इन्नेक्टक क्षिण्ड एष । प्रवन्त्री क्षेत्रकारकार्गः च्रष्टायक्रमात्र । क्ष्रिमानार क्ष्रक्रवाकामाधिक्षित्र व्यक्तिया वायमगीरमः कर्षा किन् निक्षाकामासः। छक्षी देशी विकार्ष। पृत्री गृर्शी श्रुक्त । आत्रामिकाताचार महत्त्र वित्ननपद्मत्माख्य । ममूक्ष्य मृ केनकर कथ द्यारक्ती ह श्वरणवना श्रुद्धाना । अवद्य अवाविष्य । स्विद्यक्रमा स्वि द्यारक विद्यारक स्विद्यक्री यस्त्र वर्षः। नर्माष्ट्र वाषाः वि द्वाषाः वि वाषाः वाषाः

विष्णाहित्य के अवा।

(य मः मन्या ज्ञा ज्ञा ज्ञा क्यां ज्ञाविकायिय नावायर जान्। बन्दिना कृत्या जाविसा। छ गदिन्त्रुन् दैवातार दिस्ताविवाक्षित्रकर्न् । ६७ ।

व्यंगकी विद्याक्तिमा। (म क्षार्याकः नगन्नः व्यापः एक व्यन्तमा व्यवस्थित निक्रक्षमा अवस्थ अञ्चल्प वास्तिवादः। यद्या मन्न खान ननद्वान् हेला'वकार क्रमी व्यवनाथावर हेला विनर्शन मानवावः। किक यनरवार हो क्रमा कनावन नाविका वाक्न वर्ष का बाद्यकाष्ट्रविक्व क्षित्र। कोष्ट्रवर। विश्वित्वविक्ष विश्वित्वविक्ष कर्मकतिवृद्धिक । क्षत्रप्रेतिक दिकावर काश्वावर त्याका । काविवावर व्यक्तिकाली वाका ह विविश्वाककर विविश्विक्षित क्षिक्षिकार क्षिक्षिकार । (०६ व ०० व) ह

मथा विश्वी किथा।

मान्छ। जिक्थितमाष्ट्रेनसिस (परमिक्षी।सर मधूनध्यिन।।

बाह्याबिष्ठेर मी ब्राम्मि वृक्षकर् म्याकर (वर्षो क्याकर् नहाक्रा । ८१ ।

व्यम की व्यक्तिका। (इं मामेका। मामरकारे. (इ व्यक्तिको खिकिः अवारदेवीः खिक्टेनरस्मावनिष्ठ खर्माक्षरम्बनाटेकः (म्टिनाक्षः (म्टिनः हेव क्षार्ग वयूर्णमः लाम्नाम्ब व्यक्ति व्यक्तिवाशक्तिकः। वसः (नावक्ति (नवः नावः। निक व्यक्तिः अव्यक्तिः। खत्रिक्षिष्वार्थः अन्द्विष्ठः। त्रभारित भाभति निर्माक्षकः निःश्वयः (वाषश्वरः। वाषश्वरः विकार्यः। (वयः विकिशार व्यवकर। 'निष् अकार' अववकर वायवकर। क्ष्यकर। विष्ठा हे ब्राचावर महादर्व। वहां मह क्ष्यक्ति वहाकूटनी क्षिन्। कार्यायु मन्यूरक्ति क्षप्रदं। व्यक्षी मनम केव्याविमा त्वक्षत्वित्वासमा भविष्याः। व्यक्तिके व्यवस्था विनष्ठमा 'नक्षमा क्षमाप्रभारकारभर्'ल' (ला० काशान्त) वेकाएकामा मुक्कार 'मृक् म करकी' '(माडिकिकारकार क्षित (कार कार कष्ट) हेकि चिन , किसे से कार, (बार कार १००) हिष्डि नाखार्यम वनः खभारमनः । (७८ न--- ४१ म) ।

व्यक्तिशाविश्नी किकिना।

मक्क हेन्रर जीन्द्रामार्थाञ्च माक्क

विखारममर मद्रार युव्य न १

८६ बक्कछः, कारताः कर्जुनाकवावण अयः (खावः देवक निः वस्रा छ खिल्ला छ ८वा मुल्लकार । मुल्लकर मर्वेड देखि (चनश । किक्डल कारतार । चान्वादीक वार व्यविक व्यवामिनवद्भर वादम्हीकि मान्यादाः कन्न। वोकदाशःकार्वः। यया वार वर्षप्रकीटकायर यः वळ्नार क्षकाममानगाकि व्य वाकार्गातः। यथा वकासः क्षत्रकः क्ष्मप्रकः वाकावाः छक्ष व्यव कावप्त प्रकार्यः । वाक्षक वानाईछ। किक एव वक्षकः, वृत्रविषां कार्यम विविद्याल अमानोडे जानक है। निवर्षरा यमार वम्रगर । जानि हिलाल जार्यह है वाजारची बम्बाविका वाव विकास विकास कर्य विकास विकास विकास । व्याच्याकोष्ठर कुक्रीकर्क् विकि कामा। किक देवभग्नर वृक्षमर यहार के बहार विकास महत्वस्थि। किन्द्रश्रीमा कुन्द है। जीवशक्त जीवश्रीक जीवश्राक्षा जीवश्रीमा जीवश्रीमा जिल्ली अवास क्षकावत । 'त्यारवा त्याव्यांम'- (वा० का) क्षक म्रावायत वीविषवास् वनवार ह नवर व्याश्र प्रारम्ब व्यार्मा । (०० व - ०० व.) ।

(विकान श्रामण कि का।

प्रतिकाश महत्त्वम व्याप्तकः महत्रमा स्वत्र विकार।

श्रिकार महत्त्वम व्याप्तकः महत्रमा स्वत्र विकार।

श्रिकार महत्त्वम वीता व्यवारम्भित स्वता म स्वीन १ ६० १

सिन्षि शिक्षणितिका विष्ठुण्। देवनाः मश्च सम्मः दिनका खाणाणः हेद देवनाः खाणाणि शाणिनः मश्च सम्मः स्वास्त्र स्वास्त्र

शकानी काखना।

व्याञ्च वर्षा व

विषय वित्रणाः वर्ष्ठिय देखालात्रिमखाद मान । ६० ।

विक्या दिक्षम् नक्षती विक्रूणः प्रमण्याः। विवाधिषः। वेषः विवाधः स्मानः विकाधः विकाधः

म सक्त के के के कि का का का का कि क



'स्थिशिक नियाहां छ दिश्वां प्र च स्वाधि म विश्वां । वि ययाद (१४ विश्वाः दिवां विश्वाः दिवां विश्वाः दिवां विश्वाः दिवां विश्वाः दिवां विश्वाः दिवां विश्वाः दिवाः विश्वाः वि

बिलकानी किकान

विवार्यक्रमाध्या विवयार्थ अखानीमात्र ख्रममखनांनाः।

ख्या व्यावद्यामि व्यञ्जात्रवात्राञ्चानकः वर्षिनामम् । ४२ ।

माक्षाविशः वक्षणा । में जिल्ला कृत वक्षणा विश्वास के वृत् । वक्षणे विश्वास वि

क्तिनकाणी क खका।

উল্প্রের বাং শ্বোরল এল পাৎপৃথিকী সমুদ্রঃ।

বিধেবেষা অভাগ্রেষা জ্বাসাঃ ভাতা সন্তাঃ ভবিদ্যা অবস্থা ৫৩ ৪



ं क्ट्रःशकानी किका h

्रिता प्रका करा नक्षितकारका बक्रता वस्का कर्मा कर्मा कर्मा

व्यक्ति। विकासना नामिन्। इता भिरता नावः वृद्धा व्यक्ता व्यक्ति। विक्रम व्यक्ति। विकासना नामिन्। व्यक्ति व्यक्

शक्शकाणी कविकाः।:

नद्ध चनद्रः श्रीकृतिकाः अहो। नद्य नद्यः त्रकृतिक महनश्री।

नक्षाभः चभरका रमाक्षात्रक काम्रका **भवस्का**ः

मजनायो हः दल्यो। दक्षः।

जनाजानिको जनकी। नद्ध वनकः आनाः चक्ठण् अनन्तनमाजानमान् विवासनाः जने जने नद्ध वनकः ननामानमान् वन् क्यां नद्धि व्यक्षितः व्यक्षितः विवासन् वन् क्यां नद्धि नद्ध नद्ध नद्ध नद्ध नद्ध नद्ध व्यक्ष नद्ध व्यक्ष नद्ध व्यक्ष विवासन् विवासन् विवासन् विवासन् विवासन् व्यक्ष विवासन् विवासन् विवासन् विवासन् व्यक्ष विवासन् विवा

महैनकाणी किखका।

। देखिकं खन्नगर्भारक (भगत्रशंकरणभरकः)

हैन अवस मक्रकः भूशांग्य देखे आण्डिता महा। १६ ।

ভূচো ব্রহ্মণশভির্দ্ধণতঃ। ধে রহতে চা ভূতীয়া বিষ্টুণ্। তে ব্রহ্মণো দেশত পতে পালক, উভিন্ন উপর্বিধা আবদ্ধানি। তবা বছা বহাং দেশর্ভো দেশাল্যমনানাঃ যা বার্মিদের যাচাবতে আগভেতি। মক্লভঃ তব্যমাগভ্তমুণ দমীপে প্রান্ত আগভভ্ত। কিন্তুভাঃ মক্লভঃ। প্রশানবঃ শোভদং ঘণতি তে প্রধানবঃ। তে ইক্র, মর্মাণ দচা দহ প্রমার প্রাস্থ প্রকর্মেণ শীঘ্রে তব। দেবাম্কানরতে দেবর্জি ততঃ শতৃপ্রভারঃ 'প্রণ আত্মনঃ কাচ্টু' গাঁও কাচা চ' ইভীয়াভাবঃ গাঁও কাচা গাঁও কালাবলাব পালক। বার্মিণাত্ত প্রভারা প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রভারা প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রভাবার পালক। কালাবলাবলাবিদানাত 'অক্লবন্দ্রার্মিণাত্ত প্রদান্ত বাহিত্যাত্ত প্রভারা কালাভাগং প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রসাক্ষা কালাভাগং প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রসাক্ষা কালাভাগং প্রান্ত প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রসাক্ষা কালাভাগং প্রাণ্ট বিশ্বাক্ষা তাহ স্থান্ত বাহিত্যাত্ত প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রান্ত বাহিত্যাত্ত প্রসাক্ষা কালাভাগং প্রাণ্ট বিশ্বাক্ষা কালাভাগং প্রাণ্ট বিশ্বাক্ষা কালাভাগং স্থান্ট বিশ্বাক্ষা কালাভাগং স্থান্ট বিশ্বাক্ষা কালাভাগ্য কালাভাগ্য কালাভাগ্য স্থান্ট বিশ্বাক্ষা কালাভাগ্য বিশ্বাক্ষা কালাভান্য বিশ্বাক্ষা কালাভান্য বিশ্বাক্য বিশ্বাক্ষা কালাভান্য বিশ্বাক্ষাক্ষা কালাভান্য বিশ্বাক্ষাক্ষা কালাভা

मस्यकाणी किंदना।

व्य मृतर उक्तनमिक्ष्यर वश्काक्शाम्।

विश्वित्ता यक्रां विर्वा वर्षामा त्या अकाशी हिक्स्ति। १९ ह

खन्न निष्ठ हिन्द्र निष्ठ हिन्द्र निष्ठ हिन्द्र निष्ठ हिन्द्र क्षेत्र क्षेत्र

बहेशकानी किका।

स्थान नगरण समा तथा प्रकाण त्यांव समाप्त ए विश्व । विश्वर सम्बद्धर यमब्द्धि - दम्बा स्वयुक्तम विश्वद्व स्वीताः । व देवा विका विकर्णा (वा नः निका विका विकर्णाः (वा नः निका विकारकश्च (वा क्षित्र क्षा

হে ব্রহ্মণশান্তে, দং বভোষ্ট ক্ষপতো বস্তা নিছন্তা ক্ষত প্রার্থিকে। স্কুতামন্ত্রত পাধুবচনতা। কর্মণি বস্তী। স্কুলং বোধি বুধানা ক্ষমন্ত্রতা প্রতির্থানা ক্ষামন্ত্রতাল ক্ষামন

वैकि भागान्यनीतात्रार वाकन्यत्मित्रवर्षकात्रार हकूत्वरमार्थात्रः ॥ ०० ॥

क्षिर्मादीगत्रकृष्ण (नम्मीरण मरमाक्ट्स । इक्ष्रिक्षरमाद्रमभगाद्रम अक्षरकार्यस्माक्शमद ॥ ७३ ॥

यजुदर्गन-गश्हिण।

[শুক্লযজুবের্বদ — বাজসনেয়িদংহিতা।]

প্রুতিংশোহ্ধ্যায়ঃ।

क्षाया किखना ।

भ्रह्मा वर्ष भगद्रशस्त्रका (१११मी॥२३। ज्यन्न (मामक मूकानकः।

श्राचित्रक्त्रक्त्रक्त्र्वाकः यथा मनाचननासमदेव ॥ »॥

ক্ষাবিংশেহধ্যারে স্ক্রেণ্ডাব্রনা কিরতে। সমাপ্ত ব্ প্রায়ন্তেলারতা (০০১৫০)
ক্ষার্তাধী লাম্মান্ত ব্ চতুরিংশেহধারে তানের স্মাণোদানীং প্রকরিবেশ্বধারে পিতৃন্ধের সমাণোদানীং প্রকরিবেশ্বধারে পিতৃন্ধের সমাণোদানীং প্রকরিবেশ্বধারে পিতৃন্ধের ক্ষার্তিল ক্ষার্তিল স্কর্তিল চ পিতৃনেধের মৃত্যু বর্ষার্থে তবভি । বর্ষার্থে তু ।ব্রমাণরের ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্রেণ্ডার্থি ক্ষার্থি । স্বত্যু চ ব্রেণ্ডাহ্মাতাপুর্বেণীরাভাবতঃ ক্রাঃ কর্মার্থিক ক্ষার্থি । স্বত্যু চ ব্রেণ্ডাহ্মাতাপুর্বেণীরাভাবতঃ ক্রাঃ কর্মার্থিক ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থিক ক্ষার্থি ক্ষার্থি ক্ষার্থিক ক্ষার্থিক ক্ষার্থিক ক্ষান্থি ক্ষার্থিক ক্ষার্থিক ক্ষান্থিক ক্ষান্থিক ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্ষান্থ ক্ষার্থিক ক্ষান্থ ক্